आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित

साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,

फरवरी—2024, RNI-50756

वर्ष-33, अंक-399

मूल्य 60/-

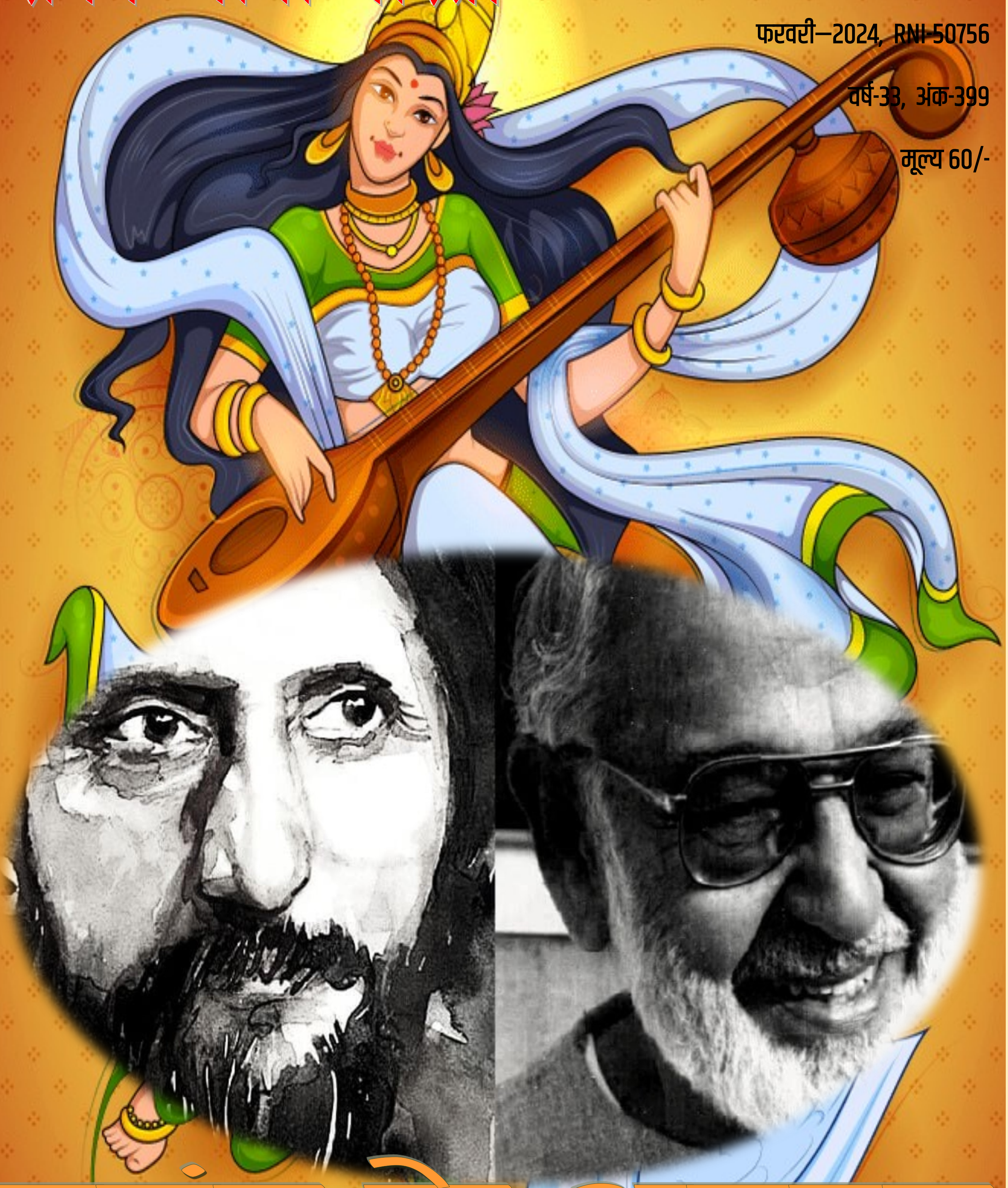

वसंत के अग्रदूत

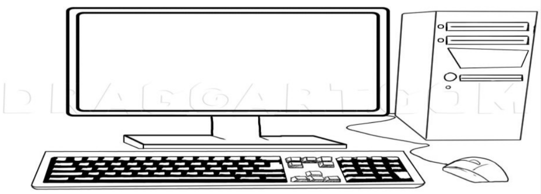

अपनी बात...

बहुआयामी सुरेन्द्र सुकुमार.... जैसा मैंने उन्हें पाया

सुरेंद्र सुकुमार वर्तमान में कथा शिल्पी और कहन के लिहाज से एक अग्रणी कथाकार हैं। सामाजिक सन्निवेश के मध्य गरीबी, जहालत और सामाजिक कुरीतियों पर उनकी कहानियाँ महज़ व्यंग्य ही नहीं कसतीं बल्कि एक हथौड़े की तरह उनपर प्रहार करती हैं। उनकी हर कहानी किसी भी भारतीय गाँव की कहानी हो सकती है उनकी कहानी का पात्र कोई भी हो सकता है यहाँ तक कि आप और मैं भी। सुरेन्द्र सुकुमार ने कोई कहानी आत्मीय सुख के लिए नहीं लिखी है बल्कि उसके उलट उनकी हर कहानी आत्मीय और सामाजिक पीड़ा का निर्मम सच बयान करती एक उत्कृष्ट दस्तावेज़ है।

सुकुमार को कुछ माह पहले, कई दिनों से फेसबुक पर पढ़ रहा था। कुछ हल्का-फुल्का रोचक था तो कुछ बहुत ही गंभीर। कुछ तो नित्तान्त साधारण सा। किन्तु, इन सब के बीच कोई एक ऐसा तन्तु भी था जो मुझे उनसे जुड़े रहने को मजबूर भी करता था। और वह तन्तु, था नहीं बल्कि है, उनका लेखन विधान, शिल्प, कहने का तरीका और कथा पात्रों का ग्रामीण पुट लिए हुए संवाद।

फिर एक दिन उनके धर्मवीर भारती और कमलेश्वर पर संक्षिप्त संस्मरण पढ़े तो जिज्ञासा और बढ़ी कि यह सुरेंद्र सुकुमार कौन है?

इसी जिज्ञासा में मैंने कादम्बिनी के पूर्व मित्र कवि धनंजय सिंह से बात की तो उन्हों ने हँस कर उनके बारे में बताया। राम अरोड़ा और विनोद क्वात्रा से भी चर्चा की। विनोद क्वात्रा ने बताया कि वह तो "हमारे एटा जिले का ही है और फक्कड़ तबीयत इंसान है। इसकी एक कहानी सारिका में छपी थी। कहानी का नाम अगिहाने है और यह कहानी बहुत चर्चित हुई थी।"

सुरेन्द्र सुकुमार के कहानी लेखन की शुरुआत उनकी आरंभिक कहानी 'अगिहाने' के सारिका जून 1975 के अंक में प्रकाशन के साथ हुई। कहानी ग्रामीण परिवेश के सर्दी के मौसम के उस अलाव से जिसे 'अगिहाने' भी कहा जाता है प्रारम्भ होती है। समाज में धनिकों और रसूखदारों द्वारा किस तरह गरीबों का शोषण किया जाता है उसका बहुत ही प्रभावशाली और मार्मिक चित्रण इस कहानी में है।

यह कहानी अपने प्रकाशन के साथ ही न केवल चर्चा में ही आई वरन इसके चलते कहानी लेखक, संपादक और प्रकाशक के ऊपर मुक्कद्दमा भी दायर हो गया। जिसके चलते सुरेन्द्र सुकुमार, कमलेश्वर और टाइम्स ऑफ इंडिया को कचहरी में तलब कर लिया गया।

कहानी एक सत्य घटना पर लिखी गई थी। परिणाम यह रहा कि उस समय स्वयं लेखक को जान तक का खतरा हो गया था।

इन विषम परिस्थितियों ने सुकुमार का हौसला नहीं तोड़ा बल्कि समाज में व्याप्त अन्याय के विरुद्ध लेखक की प्रतिबद्धता को और अधिक मजबूत किया।

सुरेन्द्र सुकुमार ने फिर द्विगुणित जोश के साथ सामाजिक सरोकार की अद्भुत कहानियाँ लिखीं। सारिका और धर्मयुग जैसी उस काल की श्रेष्ठ पत्रिकाओं जिनमें एक कहानी का भी प्रकाशित होने का अर्थ और महत्व कल्पनातीत होता था, जिनके संपादक कमलेश्वर और धर्मवीर भारती थे में उनकी कहानियों का प्रकाशन नियमित होने लगा।

मुझे सुरेन्द्र सुकुमार से मिलने की उत्सुकता प्रबल हो उठी। उनसे फोन पर बात की तो स्पष्ट हुआ कि वे अलीगढ़ रहते हैं।

अलीगढ़ दिल्ली से अधिक दूर नहीं है, तो मन में ठान लिया कि एक दिन अलीगढ़ चल कर उनसे मुलाक़ात की जाय।

मैंने तुरंत 22 फरवरी 2023 का दिल्ली से अलीगढ़ का लखनऊ शताब्दी का टिकट कटाया और उन्हें बताया कि में 22 फरवरी की प्रातः अलीगढ़ पहुंच रहा हूं। उन्हों ने कहा आएं, मैं घर पर ही रहता हूं।

यह सब हो ही चुका था कि एक सुबह सारिका वाले कथाकार रमेश बत्रा जी की पत्नी जया का फोन आया, उनसे जिक्र किया कि अलीगढ़ सुरेंद्र सुकुमार से मिलने जा रहा हूं।

वे जिद्द करने लगीं कि वे भी मेरे साथ अलीगढ़ चलेंगी।

"मैं भी सुरेंद्र से मिलूंगी। वो हमारे घर भी आया करते थे। और रमेश के अच्छे मित्र थे।" जया ने यह भी बताया कि सुरेंद्र की एक बेटी है जो गुरुग्राम में रहती है।

टिकट इत्यादि के चलते जया का मेरे साथ अलीगढ़ जाना संभव न हो पाया पर उनसे मिली जानकारी ने आग में घी का काम किया। अब मैं इस सुरेंद्र सुकुमार से हर हालत में मिलना चाहता था।

फिर फरवरी में एक दिन ऐसा आया कि मैं सुबह-सुबह नई दिल्ली से शताब्दी ट्रेन पकड़ कर अलीगढ़ पहुँच गया।

चूंकि, सुरेन्द्र जी को बता कर यह यात्रा कर रहा था सो ट्रेन में सफर के दौरान कई बार उनका फोन मेरे पास आया उस दिन शताब्दी ट्रेन ने कुछ देर से, लगभग सवा नौ बजे सुबह मुझे अलीगढ़ स्टेशन पर उतारा।

सुरेन्द्र सुकुमार अलीगढ़ का अपना पुराना आवास बेच कर अब ओज़ोन सिटी के रेसिडेंशियल कॉलोनी में शिफ्ट कर गए हैं। ओज़ोन सिटी, अलीगढ़ रेलवे स्टेशन से लगभग 7 किलो मीटर दूर है।

स्टेशन से बाहर आते ही मुझे चाइनीज़ बैट्री रिक्शा मिल गया। जाड़े की उस सुबह सुरेन्द्र सुकुमार अपने मकान के बाहर ही टहलते हुए मिल गए। यह मेरी उनसे पहली मुलाक़ात थी, सो फेसबुक पर उनकी फोटो ही पहचान सिद्ध करने में सहायक हुई।

अब हम उनके कमरे में थे। यह तीन कमरे का नीचे का फ्लैट है। जो कि अकेले सुकुमार के लिए पर्याप्त है।

उनकी पत्नी सुधा का देहावसान कुछ समय पहले हो चुका है। उनकी एक ही पुत्री हैं जो अपने पति के साथ गुरुग्राम में रहती हैं।

नौकर चाय बना कर दे गया और हमारा बातचीत का सिलसिला शुरू हो गया। मैं अपने साथ एक छोटा ट्रॉली बैग ले गया था।

हम ड्राइंग रूम से निकल कर दूसरे कमरे में आ गए। यहाँ बड़ी सी इस्पाती अलमारी में उनकी पुरानी पुस्तकें इत्यादि पड़ी थीं।

मैं उन्हें पुरानी पुस्तकों का बंडल पकड़ाता जाता और उनमें से वे कुछ को चिन्हित कर अलग रखते जाते। काफी समय लगा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपी उनकी कहानियाँ अब एकत्रित हो गई थीं।

सुरेन्द्र सुकुमार अब भी सक्रिय हैं। उन्हों ने लगभग अस्सी कालजयी कहानियाँ लिखीं जो अपने समय में काफी चर्चा में रहीं।

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइंदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304
पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।
प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

संपर्क भाषा भारती

संपादकीय परिवार

मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा
प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

आशा शैली : शैलसूत्र त्रैमासिक पत्रिका —सम्पादन
इन्दिरा नगर-2, लाल कुआं, हल्द्वानी-263402 उत्तराखंड
फोन नंबर : 7055336168/9456717150
ईमेल : sha.shaili@gmail.com

अंजना सवि छलोत्रे : वृन्दा, मासिक पत्रिका: सम्पादन
जी-48, फॉर्च्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039 मध्य प्रदेश
फोन नंबर : 8461912125
ईमेल : anjana.savi@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत है...

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाउनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...

फरवरी-2024

क्रम:	शीर्षक	लेखक:	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	समाचार : श्री ठकुरेला तथा प्रणेता साहित्य न्यास	समाचार	6
3	समाचार : ऑनलाइन चित्र/संगीत प्रदर्शनी	समाचार	8
4	समाचार : केवल सूद मुंबई में सम्मानित	समाचार	10
5	सीवान के रूपेश को मिला सम्मान	समाचार	12
6	सविता चड्ढा को सम्मान/ कविता	व्यग्र पाण्डेय	11
7	कविता	बाबा कल्पनेश/सूर्य प्रकाश मिश्र	12
8	भारतीय संस्कृति में वसंत पंचमी	आकांक्षा यादव	13-14
9	अयोध्या में राम लला प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव	शशिबिन्दु नारायण मिश्र	15-16
10	कविता	सुमन झा	16
11	वसंत के अग्रदूत	अज्ञेय	18-26
12	लघुकथा : गिद्धों के बीच	अजय रोहिल्ला	27
13	समझो द्वारे पर है बसंत	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'	29-30
14	कविता	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'	30
15	कहानी : खुशी का पैमाना	अंजना छलोत्रे 'सवि'	31-32
16	लघुकथाएँ : साधना एवं स्नेह सिक्त	दीपक कुमार तथा ज्योत्सना सिंह	34
17	ब्लैक होल	विजयानंद विजय	36
18	कविता	तुषार शर्मा/संजय कुमार सिंह	37
19	कहानी : न्यूज़	संजय कुमार सिंह	38-42
20	कविता	रीना सोनालिका	42
21	कविता	सोनल मंजू/मो. काशिफ हयात/ डॉ अखिलेश	43
22	कविता	केशव शरण	45
23	आज के संदीपनि....	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'	46-47
24	कविता	डॉ वीरेंद्र प्रसाद	47
25	कविता	सुषमा सक्सेना एवं राकेश जोशी	49
26	विज्ञान व्रत की ग़ज़लें	विज्ञान व्रत	52-53
27	कविता	राम रक्षा मिश्र/आलोक रंजन	53
28	कविता	विनोद वर्मा/विश्व प्रकाश मेहरा	57
29	कविता	कृष्ण चन्द्र महादेविया	60

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713

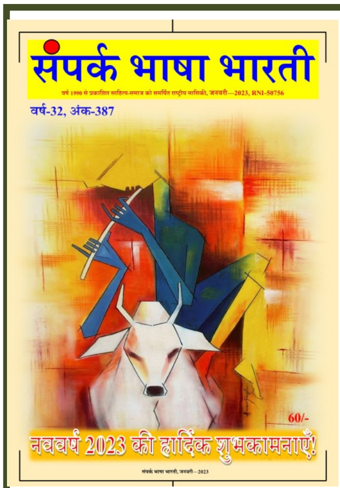

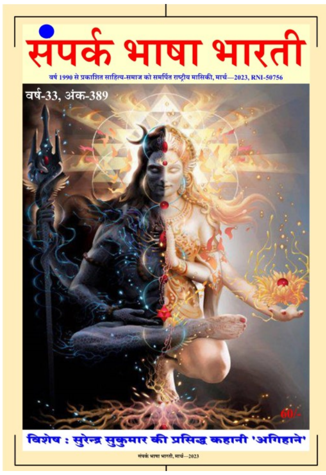

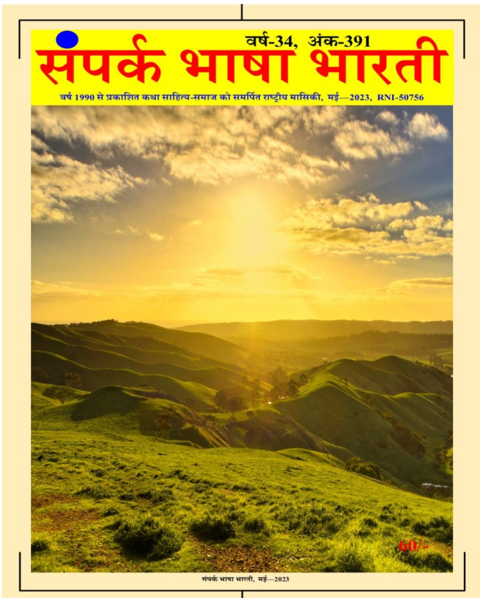

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

त्रिलोक सिंह ठकुरेला सम्मानित

श्रीनाथद्वारा। साहित्यकार त्रिलोक सिंह ठकुरेला को साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा द्वारा उनके द्वारा बाल साहित्य के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय कार्य के लिए बाल साहित्य भूषण सम्मान से सम्मानित किया गया है।

दिनांक 6 एवं 7 जनवरी 2024 को साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा के श्री भगवती प्रसाद देवपुरा प्रेक्षागार में आयोजित भव्य राष्ट्रीय बाल साहित्य समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम, अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकों और पत्रिकाओं के प्रदर्शन, काव्यपाठ तथा कहानी वाचन के साथ साथ देश के विभिन्न राज्यों से आये साहित्यकारों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर साहित्य मण्डल द्वारा त्रिलोक सिंह ठकुरेला को पगड़ी और कंठहार पहनाते हुए अंगवस्त्र, शाॅल,श्रीफल और श्रीनाथ जी छवि और प्रसाद देकर स्वागत किया गया। त्रिलोक सिंह ठकुरेला को साहित्य मण्डल के अध्यक्ष श्री मदनमोहन शर्मा तथा प्रधानमंत्री श्री श्यामप्रसाद देवपुरा द्वारा उपाधि पत्र देते हुए बाल साहित्य भूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। त्रिलोक सिंह ठकुरेला को इससे पूर्व भी राजस्थान साहित्य अकादमी तथा पण्डित जवाहरलाल नेहरू बाल साहित्य अकादमी सहित अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।उल्लेखनीय है कि त्रिलोक सिंह ठकुरेला की रचनाएँ तीस से अधिक पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित की गयी है। त्रिलोक सिंह ठकुरेला ने कुण्डलिया छंद को पुनर्स्थापित करने में अहम भूमिका निभाते हुए बाल साहित्य के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है।

प्रणेता साहित्य न्यास को काका कालेलकर राष्ट्रीय सम्मान

काका कालेलकर और विष्णु प्रभाकर की स्मृति में 20 जनवरी2024 को सन्निधि संगोष्ठी के 100 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में शतक संगति का आयोजन 'गांधी हिंदुस्तानी साहित्य सभा' नई दिल्ली में किया गया।मुख्य अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध हास्य कवि सुरेंद्र शर्मा जी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार मुकेश भारद्वाज जी ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय से डॉक्टर गोपेश्वर सिंह की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन प्रसून लतान जी ने लाजवाब ढंग से किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध हास्य कवि सुरेंद्र शर्मा जी ने कहा कि संन्निधि संगोष्ठी का आयोजन साहित्य की विभिन्न विधाओं से जुड़ी साहित्य संस्थाओं और विभूतियों को सम्मानित करने के लिए किया जाता रहा है। इसी कड़ी में 'प्रणेता साहित्य न्यास 'को भी सम्मानित किया गया, जिसे संस्थापक अध्यक्ष श्री एस जी एस सिसोदिया जी की अनुपस्थिति में,प्रणेता की महासचिव शकुंतला मित्तल ने ग्रहण किया।इन कार्यक्रमों के जरिए काका कालेलकर और विष्णु प्रभाकर के विचारों को आगे बढ़ाया जा रहा है। इसकी सराहना आयोजन समिति और समस्त साहित्यकारों ने मुक्त कंठ से की। इस भव्य आयोजन में विशेष मार्गदर्शन के लिए अपने समय के स्थापित साहित्यकारों को भी आमंत्रित किया गया।

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

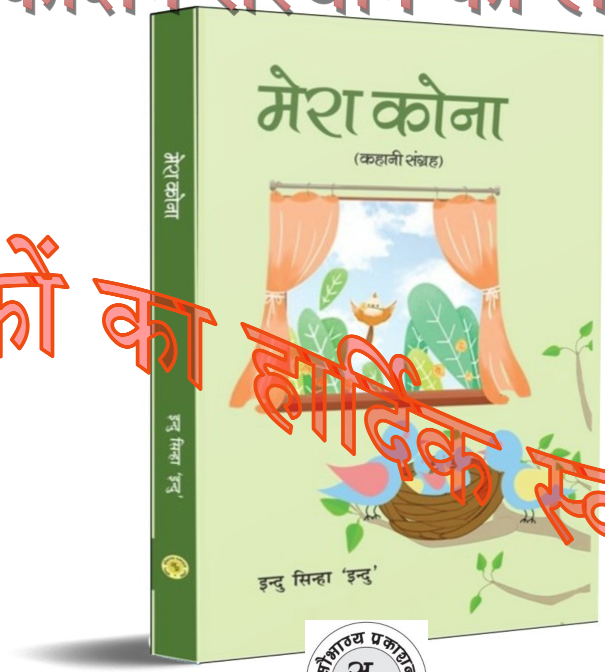

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)
Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'
ISBN : 978-81-958985-1-0
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250/-
Genre : Prose /गद्य

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

ऑनलाइन चित्रकला प्रदर्शनी और संगीत

पूरे देश में पहली बार ऑनलाइन चित्रकला प्रदर्शनी और संगीत सम्मेलन लगाने का सार्थक पहल किया था I कोरोना काल में चलाया गया यह अभियान सार्थक हुआ तो पूरे देश भर के कलाकार हमसे आ जुड़े I

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वाधान में, फेसबुक के " अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका " के पेज पर, " हेलो फेसबुक संगीत एवं चित्रकला सम्मेलन " के संचालन के क्रम में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सिद्धेश्वर ने उपरोक्त उद्गार व्यक्त किये I

ऑनलाइन संगीत सम्मेलन की सराहना करते हुए सिद्धेश्वर ने कहा कि -- बेजुबां चित्रों में जीवंतता, और शब्दों में गजब की संगीतमय ध्वनि शामिल रहती है । क्या यह सत्य नहीं है कि हमारी आत्मा में संगीत और सुर की स्वर लहरी वास करती है ? क्योंकि संगीत सुर हमारे चहुंओर विद्यमान है, इस वातावरण में वायु की भांति ..हमारे अंदर चल रहे सांसों की भांति ..।

संगीत सत्य की आत्मा है और वह संगीत के सुर एवं ध्वनि में वास करती है। संगीत का कोई रूप नहीं, निराकार है,वायु समान है, लेकिन चहुंओर उसका ठौर है। प्रकृति की माधूर्यता,संरचना भी संगीत से गुंजायमान है। संसर्ग और विसर्ग में भी मनुष्य संगीत से अछूता नहीं रह सकता। कोरोना जैसे भयावह काल में स्वयं को तनाव मुक्त के लिए संगीत से बेहतर कोई दूसरा माध्यम बचा ही नहीं था।

पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ लेखिका इंदु उपाध्याय ने कहा कि - संगीत किसी औषधि से कम नहीं है। जहां सारी दवाएं विफल हो जाती हैं वहां संगीत ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मरीज को ठीक किया जाता है । ये संजीवनी से कम नहीं है। बड़ी से बड़ी बीमारी भी इससे ठीक किया जा सकता है।

1. "ढलती जाए शाम करले दिल की बात.." नाथ ने अद्भुत गायन किया। पुराने और सदाबहार गानों को जीवंत करने और श्रोताओं के बीच में सिद्धेश्वर जी एवं मुरारी मधुकर का अंदाज अनोखा है I मैं साधुवाद देता हूं I

इस ऑनलाइन कार्यक्रम में शशि भूषण जी की कलाकृतियों का प्रदर्शन भी अद्भुत रहा I किसी भी चित्रकार की कोई भी तस्वीर या चित्रकारी प्रिय और अद्भुत होती है। शशि भूषण जी को मैं हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं। इनकी एक -एक चित्र उसके भाव इतने अद्भुत है ।ऐसा लग रहा है मानो वह बोल उठेंगे ऐसा जादू बहुत कम देखने को मिलता है ।आपको हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं । आश्चर्य की बात यह है कि बिना सीखे ही इतनी आकर्षक कलाकारी आपलोग करते हैं तो सीखने के बाद तो कमाल ही कर देंगे I मधुरेश नारायण जी की प्रस्तुति - 'तस्वीर बनाता हूं तस्वीर नहीं बनती...' क्या खूब गाया है महोदय ! मन झूम उठा। आजकल ना के बराबर ऐसे गीत गाए और सुने जाते हैं। पुराने फिल्मी गीतों पर सिद्धेश्वर जी का जीवंत अभिनय दर्शकों को आकर्षित करने की क्षमता रखती है I राश दादा राश जी की प्रस्तुति सदैव सराहनीय रहती है, गीत, गज़ल कविता किसी भी सृजन से श्रोता का मन मोह लेते हैं।

बाकी सबकी प्रस्तुति सराहनीय मैं सबको बधाई देती हूं।

'अंदाज़ नए- रंग पुराने' के सभी कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं ।राजेंद्रनाथ (लखनऊ) ने - " ए मेरे दिल कहीं और चल,गम की दुनिया से दिल भर गया!"/ रवि किशन ने - "इतनी हंसी हो इतनी जवां रात क्या करें ?"/ रास दादा रास ने - पुष्प की बेदी पर रास का श्रृंगार!"/ मधुरेश नारायण ने -" तस्वीर बनाता हूं तस्वीर नहीं बनती I"/

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का ' एक राम भजन - " नर शरीर अनमोल रे प्राणी, प्रभु कृपा से पाया है, झूठे जग प्रपंच में पड़कर, क्यों प्रभु को बिसराया है " का वीडियो, राज रानी प्रिया द्वारा प्राप्त, किसी पेशेवर गायक से कम नहीं था। सबों के मन को मुग्ध किया। रजनी श्रीवास्तव अनंता ने सिद्धेश्वर जी की एक गजल की संगीतमय प्रस्तुति सुमधुर रही I

इस कार्यक्रम में डॉ संतोष मालवीय, डॉ सुशील कुमार, दुर्गेश मोहन,दिलीप, पुष्प रंजन, आदि की भी भागीदारी रही I

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **मौत और रहस्य (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-9-4**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 208

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

मुम्बई (नीना गर्ग, विशेष)

हिन्दी के लोकप्रिय साहित्यकार केवल सूद का मुंबई में ऐतिहासिक सम्मान

हिन्दी के जाने माने वरिष्ठ कथाकार पत्रकार डॉ. रंजन जैदी ने कहा कि हिन्दी के शिखर-पुरुष,'केवल सूद' अपने आप में अदब की खुशबुओं का एक शहर, सांस्कृतिक यात्राओं की आस्था और अपनी ही रचनाओं के सलीब की आस्था का प्रतीक हैँ। वह लेखक ही नहीं, विविध वर्णी साहित्यकार हैँ ......'

यह बात उन्होंने केवल सूद की चर्चित कहानियाँ तथा केवल सूद पर ही केंद्रित बरनाला अंतर्राष्ट्रीय अंक 'कालका मेल' के लोकार्पण के अवसर पर पत्रकारों से बातें करते हुए कहीं। उन्होंने कहा कि केवल सूद का उपन्यास 'मुर्गीखाना' उस जमाने में लिखा गया था जब मंटो सहित अनेक तेजतर्रार लेखक व लेखिकाओं के साहित्य पर कथित अश्लील साहित्य के आरोप लगाए जा रहे थे, न्याय-व्यवस्था रचनाकारों को दंडित कर रही थी, केवल सूद तब 'मुर्गीखाना उपन्यास लिख रहे थे। यही उपन्यास कालांतर में विश्व की अनेक भाषाओं में भी प्रकाशित हुआ है।

पत्रकार द्वारा पूछे गए सवाल का जवाब देते हुए श्री जैदी ने इस कठिन सवाल का जवाब कुछ इस तरह से दिया कि समलैंगिकता पर लिखे गए इस उपन्यास के बीज का प्रस्फुटन लेखक के भीतर छुपे हुए कैमरे की आँख के सामने हुआ है। उसके दृश्य स्वयं लेखक ने देखे हैं।"

एक और साल के जवाब में डॉ रंजन जैदी ने बताया कि केवल यह उपन्यास ही नहीं बल्कि केवल सूद के सम्पूर्ण साहित्य में समाज की दर्दनाक पीडा का अहसास होता है जिसमें दरकते जिस्मों, पसीनों में नहाई साँसों, तनाव में बिखरते अफसानों और खुली व डरी आँखों से देखते सपनों के गलित रिश्तों का आक्रोश, खलन के रूप में दिखाई देता है।' उन्होंने कहा कि यौनचार के महा-पंडित इसी मोड पर पहुंचकर इतना उत्तेजित हो जाते हैं कि उपन्यास की पात्र शीला, आत्म-हत्या करने की जगह, हत्या कर देती है।।"

'केवल सूद की चर्चित कहानियाँ' (कहानी संग्रह), तथा केवल सूद पर केंद्रित बरनाला अंतर्राष्ट्रीय विशेषांक 'कालका मेल' का मुंबई विश्वविद्यालय, कलीना के जेपी नाईक भवन सभागार, विद्यानगरी परिसर में हुआ जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ कथाकार, पत्रकार, हिन्दी दैनिक 'भूमि-पुत्र' के संपादक डॉ० रंजन जैदी ने की। इस आयोजन के विशिष्ठ अतिथितियों में अंतर्राष्ट्रीय मंचों के ख्याति-नायक कलाकार सैय्यद साहिल आग़ा भी थे, जिन्होंने कार्यक्रम में दास्तानगोई पर अपनी प्रतिभा का प्रशंसनीय प्रदर्शन किया और की कहानियाँ सुनाई।

समारोह के प्रमुख अतिथि थे मीडिया के वरिष्ठ सिने-निदेशक ईश्वर भट्टी, सम्मानित गणों में वरिष्ठ कथाकार हरीश पाठक, डा. मंगेश वरसोड़, अवधेश राय, डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र, सुश्री कुसुम तिवारी, सुश्री नीलिमा दुबे पांडे, सुश्री आभा दुबे, तथा सुश्री लीना शोभा जी।

कार्यक्रम का आयोजन व संचालन डॉ. हूबनाथ पांडेय तथा 'शाहिरीनामा' के लेखक कवि-कथाकार रमेश यादव ने किया।

साहित्यकार डा. सविता चड्ढा को मिलेंगे "साहित्य भूषण सम्मान" और "प्रेम रत्न सम्मान"

2023 का 'प्रेम रत्न सम्मान' सुविख्यात साहित्यकार डॉक्टर सविता चड्ढा जी को दिया जाएगा।यह सम्मान 'विद्या-प्रेम संस्कृति न्यास' अंतरराष्ट्रीय लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार सविता चड्ढा जी को सम्मानित कर स्वयं गौरव का अनुभव कर रहा है। संस्था की ओर से यह पुरस्कार 1 मार्च 2024 को दिया जाएगा।

डॉ संजीव कुमार ,फाउंडर-चेयरमैन ने ये भी सूचित करते हुए अपार हर्ष व्यक्त किया है कि इंडिया नेटबुक्स तथा बीपीए फ़ाउंडेशन के संयुक्त प्रयास में 2023 का हिंदी साहित्यकार सम्मान उत्सव 9 मार्च 2024 को दिल्ली में आयोजित किया जाएगा।

एक प्रबुद्ध साहित्यकार के रूप में कविता के क्षेत्र मे डॉ. सविता चडढा के अपार एवं बहुमूल्य योगदान के लिए आपको प्रेमचंद्र शुक्ला: "साहित्य भूषण सम्मान"

प्रदान किया जाना है ।उल्लेखनीय है कि सविता चड्ढा पिछले 4 दशकों से निरंतर साहित्य सृजन में रत है। आपके लेखन में विभिन्न विधाएं समाहित है, कहानी, कविता पत्रकारिता, लेख, बाल साहित्य, उपन्यास आदि में अब तक 50 से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

डॉ. सविता चड्ढा ने 1982 से साहित्य सृजन के क्षेत्र में निरंतर लेखन कार्य कर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर साहित्यिक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान कायम की हैं। जहां राही रैकिंग के सर्वे में इस वर्ष के 100 बड़े रचनाकारों की सूची में आपको शामिल किया गया है वहीं आपकी साहित्यिक उपलब्धियों को देखते हुए

राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य सृजन एवं राष्ट्र भाषा हिंदी के संवर्धन व विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए हरियाणा के नाम को गौरव प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर ने "हरियाणा गौरव सम्मान" सम्मान स्वरूप 2 लाख रुपये की राशि, शॉल, प्रतीक चिन्ह से भी संम्मानित किया है।1987-88 मे ही आपके हिंदी अकादमी, दिल्ली से साहित्य कृति सम्मान मिल चुका है। 70 से अधिक राष्ट्रीय, अंतरराष्टरीय सम्मान प्राप्त बहुमुखी प्रतिभा की धनी सुप्रसिद्ध कहानीकार डॉ. सविता चड्ढा की विभिन्न विधाओं पर दर्जनों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। आपकी पत्रकारिता विषयक चार पुस्तकें दिल्ली,मेरठ ,पंजाब,व अंबेडकर विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाती है। आपके लेखन,कहानियों पर टेली फ़िल्में बन चुकी है और शोध कार्य चल रहे है। आपको पूर्व में भी साहित्य,लेखन, व सामाजिक सरोकारों के लिए अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मान समय समय पर मिले हैं। आप श्रेष्ठ लेखन को जहां गंगा में स्नान करने जैसा मानती हैं वहीं आप अपने लेखन के लिए और प्राप्त पुरस्कारों के लिए ईश्वर के साथ-साथ अपने समस्त पाठकों का और प्रकाशकों का भी आभार व्यक्त करती हैं।

जीवन मूल्य हैं राम हमारे...

कल्पनाएं साकार होंगी
अभिलाषाएं आकार लेंगी
करवटें ले रही हैं सदियां
झालर भी अब झंकार देंगी
मंदिर प्रभु का बन गया है
गर्व से सर तन गया है
धन्य चौबीस जनवरी बाइस
मन खुशियों में सन गया है
स्वर्ग भी लजा रहा होगा
देख मंदिर की भव्यता को
विश्व भी अब चकित है
लख अवध की नव्यता को
वनवास सदियों का बिताकर
धन्य अवध फिर राम पाकर
आओ करें स्वागत प्रभु का
वंदन करें सब सिर नवाकर
गली मौहल्ले खूब सजाएं
घर घर खुशी के दीप जलाएं
बाइस जनवरी को हम सारे
फिर से दीपावली मनाएं
कितने बलिदानों को देकर
कितने अपमानों को सहकर
पहुंचे हैं सदियों में यहाँ तक
देखा सब सरयू ने बहकर
अब ना कोई करे दुस्साहस
ऐसे यत्न सदा रखने हैं
जीवन मूल्य हैं राम हमारे
सदा पास हमको रखने हैं

****

व्यग्र पाण्डे

आगमन राम

अवध आगमन राम कर रहे, जन-मानस हर्षाया है।
ईश कृपा का सागर सरयू, आज पुनः लहराया है।।

कैकेई दोषी थी कितनी, स्वयं कलम यह खोलेगी।
आतंकी का अंत हो सके, गिरा विधा वह बोलेगी
केवल चौदह वर्ष चाहिए, भरत लाल को क्यों गद्दी।
अतिशय प्रिय दशरथ की रानी , इतनी ओछी थी भद्दी।।
लंकापति पर विजय राम ने, धर्म ध्वजा फहराया है।
ईश कृपा का सागर सरयू, आज पुनः लहराया है।।

गये वर्ष के वर्ष बीतते, भारत पीड़ा को झेले।
विषधर फन फैलाए अपने, टेक लगाए थे मेले।।
बहन-बेटियों का चलना भी, अतिशय कठिन हुआ जाता।
चढ़ा शीश पर आतंकी था, मनमाने गाने गाता।।
ऐसे में श्री राम आगमन, अवध पुरी को भाया है।
ईश कृपा का सागर सरयू, आज पुनः लहराया है।।

केवल चौदह वर्ष बीतते, राम अवध घर लौटे थे।
प्रथम मिले वे कैकेई से, उसके प्रिय कजरौटे थे।।
लेकिन पूरे पांच शतक के, बाद राम घर आए हैं।
जन मानस के चित्त गगन पर, सौख्य मेह मड़राए हैं।।
इसीलिए तो आज राष्ट्र की, पुलकित होती काया है।
ईश कृपा का सागर सरयू, आज पुनः लहराया है।।

रावण का आतंक मिटाने, को तब राम पधारे थे।
सीता हरण बहाना पाकर, रावण रण में मारे थे।।
अद्य लग रहा धर्म सनातन, चला रसातल जाएगा।।
भारत में म्लेच्छों का केवल, अनय ध्वजा फहराएगा।।
अहंकार जब म्लेच्छ वंश का, सिर के ऊपर धाया है।
ईश कृपा का सागर सरयू, आज पुनः लहराया है।।

हुए प्रतिष्ठित पुनः राम जब, चकित विश्व हर्षाया है।
गिरा न गा पाती हरि महिमा, स्वयं कृष्ण ने गाया है।।
जब कांग्रेसी हवा विषैली,यम के लोक सिधारी है।।
तब सरयू तट राम कृपा से, जय-जय गिरा उचारी है।।
प्राण प्रतिष्ठा मिला बहाना, शुभ अवसर यह आया है।।
ईश कृपा का सागर सरयू, आज पुनः लहराया है।।

बाबा कल्पनेश

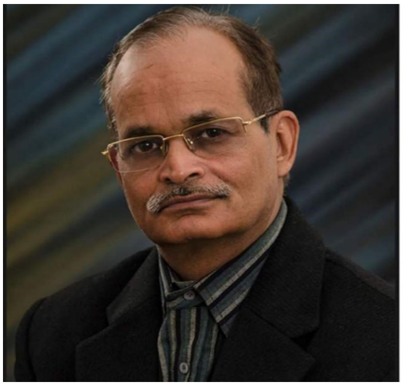

बुधुवा और झबरा

पता नहीं किस्मत खुली या अभाग का द्वार
छलका बुधुवा के लिए मंत्री जी का प्यार

पहुँच गया तिउहार मनाने सारा अमला
बरगद को झुक गया देख हरियाया गमला
लगे खींचने फोटो जमकर टी वी और अखबार

मुखिया की थाली गिलास ने की अगवानी
प्रकट हो गया मड़ई में बोतल का पानी
खुशी खुशी में गले पड़ गया थोड़ा और उधार

प्रायोजित है रोटी गुड़ दे गया कसाई
भरत मिलाप देखकर हँसती गहरी खाई
भौंचक है टोला निहारकर कलयुग में अवतार

पुश्तैनी यादों का सेजरा खुला हुआ है
बुधुवा चढ़ी कड़ाही का गुलगुला हुआ है
गदगद है बुधनी समेटकर वादों का उपहार

जिस दिन से मौसम चुनाव का सजग हो गया
बुधुवा का दर्जा झबरा से अलग हो गया
कुक्कुर भला कहाँ से लाये वोटिंग का अधिकार

सूर्य प्रकाश मिश्र

भारतीय संस्कृति में वसंत पंचमी

वसंत पंचमी एक ओर जहां ऋतुराज के आगमन का दिन है, वहीं यह विद्या की देवी और वीणावादिनी सरस्वती की पूजा का भी दिन है। ग्रंथों के अनुसार वाग्देवी सरस्वती ब्रह्मस्वरूपा, कामधेनु तथा समस्त देवों की प्रतिनिधि हैं। ये ही विद्या, बुद्धि और ज्ञान की देवी हैं। इसीलिए इस दिन विद्या तथा संगीत की देवी की पूजा की जाती है। अमित तेजस्वनी व अनंत गुणशालिनी देवी सरस्वती की पूजा-आराधना के लिए माघमास की पंचमी तिथि निर्धारित की गयी हैं। वसंत पंचमी को इनका आविर्भाव दिवस माना जाता है। अतः वागीश्वरी जयंती व श्रीपंचमी नाम से भी यह तिथि प्रसिद्ध है। वसंत पंचमी को त्योहार के रूप में मनाए जाने के पीछे कई तरह की मान्यताएं हैं। ऐसा माना जाता है कि वसंत पंचमी के दिन ही देवी सरस्वती का अवतरण हुआ था। मान्यता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि की रचना करने के बाद मनुष्य की रचना की। मनुष्य की रचना के बाद उन्होंने अनुभव किया कि मनुष्य की रचना मात्र से ही सृष्टि की गति को संचालित नहीं किया जा सकता। उन्होंने अनुभव किया कि निःशब्द सृष्टि का औचित्य नहीं है, क्योंकि शब्दहीनता के कारण विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं था और अभिव्यक्ति के माध्यम के नहीं होने के कारण ज्ञान का प्रसार नहीं हो पा रहा था। इसके बाद उन्होंने विष्णु से अनुमति लेकर एक चतुर्भुजी स्त्री की रचना की, जिसके एक हाथ में वीणा तथा दूसरा हाथ वर मुद्रा में था। अन्य दोनों हाथों में पुस्तक और माला थी। ब्रह्म जी ने देवी से वीणा बजाने का अनुरोध किया। जैसे ही देवी ने वीणा का मधुरनाद किया, संसार के समस्त जीव-जन्तुओं को वाणी प्राप्त हो गई। जलधारा में कोलाहल व्याप्त हो गया। पवन चलने से सरसराहट होने लगी। तब ब्रह्म ने उस देवी को वाणी की देवी सरस्वती कहा। सरस्वती को बागीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणावाद और वाग्देवी सहित अनेक नामों से पूजा जाता है। ये विद्या और बुद्धि प्रदाता हैं। संगीत की उत्पत्ति करने के कारण ये संगीत की देवी भी हैं। वसंत पंचमी के दिन को इनके जन्मोत्सव के रूप में भी मनाते हैं। सरस्वती को साहित्य, संगीत, कला की देवी माना जाता है। सरस्वती की वीणा संगीत की, पुस्तक विचार की और मयूर वाहन कला की अभिव्यक्ति है। आम भाषा में सरस्वती को शिक्षा की देवी माना गया है। शब्द के माधुर्य और रस से युक्त होने के कारण इनका नाम सरस्वती पड़ा। सरस्वती ने जब अपनी

आकांक्षा यादव
पोस्टमास्टर जनरल आवास, वाराणसी

वीणा को झंकृत किया, तो समस्त सृष्टि में नाद की पहली अनुगूंज हुई। चूंकि सरस्वती का अवतरण माघ मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को हुआ था, अतः इस दिन को वसंत पंचमी के रूप में मनाया जाता है। मां सरस्वती को ज्ञान, बुद्धि, कला और कौशल की देवी माना जाता है. यही वजह है ज्ञान के पिपासु लोग मां सरस्वती का आशीर्वाद पाने के लिए उनकी वंदना करते हैं। मां सरस्वती हमें विद्या और ज्ञान अर्जित करने के अलावा और भी कई महत्वपूर्ण संकेत देती हैं। देवी सरस्वती के संपूर्ण आभा मंडल से हमें जीवन पथ पर सफलता पाने के अनेक संकेत मिलते हैं। श्वेत वस्त्रों में मां सरस्वती बेहद आकर्षक और तेजस्वी नजर आती हैं। उनका प्रिय रंग श्वेत है जो सात्विकता, सहजता और सरलता का प्रतीक है। देवी सरस्वती के श्वेत वस्त्रों से हमें दो संकेत मिलते हैं। पहला, हमारा ज्ञान निर्मल हो। हमें जो भी शिक्षा और ज्ञान मिले वह सकारात्मक हो। दूसरा, हमारा चरित्र अच्छा हो। हमारे जीवन में किसी भी प्रकार की बुराई न हो।ऋग्देव में भगवती सरस्वती का वर्णन करते हुए कहा गया है-''प्रणो देवी सरस्वती वाजेभिर्वजिनीवती धीनामणित्रयवतु''। अर्थात ये परम चेतना हैं। सरस्वती के रूप में ये हमारी बुद्धि, प्रज्ञा तथा मनोवृत्तियों की संरक्षिका हैं। इसमें जो आचार और मेधा है उसका आधार भगवती सरस्वती ही हैं। इनकी समृद्धि और स्वरूप का वैभव अद्भुत है। पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण ने सरस्वती से खुश होकर उन्हें वरदान दिया था कि वसंत पंचमी के दिन तुम्हारी भी आराधना की जाएगी और यूं भारत के कई हिस्सों में वसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी सरस्वती की भी पूजा होने लगी जो आज तक जारी है। महर्षियों और मनीषियों ने कहा है कि वसंत पंचमी को पूरी श्रद्धा से सरस्वती की पूजा करनी चाहिए। माना जाता है कि इसी दिन शब्दों की शक्ति मनुष्य की झोली में आई थी। बच्चों को इस दिन अक्षर ज्ञान कराना और बोलना सिखाना शुभ माना जाता है। अतः सरस्वती देवी की इस वार्षिक पूजा के साथ ही बालकों के अक्षरारंभ एव विद्यारंभ की तिथियों पर भी सरस्वती पूजन का विधान है। वसंत पंचमी को श्री पंचमी भी कहा जाता है जो सुख, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने का परिचायक है। इस दिन पतंग उड़ाने की भी परंपरा है जो मनुष्य के मन में भरे उल्लास को प्रकट करने का माध्यम है। हिन्दू धर्म में पीले (वासंती) रंग को शुभ माना गया है। वासंती रंग शुद्ध और सात्विक प्रवृत्ति का परिचायक है। यह सादगी और निर्मलता का भी प्रतीक है। वसंत पंचमी के दिन वासंती यानी पीले रंग के वस्त्र धारण करने के साथ पीले रंग के चावल, पीला रायता, वासंती पूरियाँ, पीले लड्डू व केसर की खीर बनाई जाती है। माँ सरस्वती को श्वेत रंग पसंद है और चावल सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। इसीलिए इस दिन माँ सरस्वती को चावल का भोग लगाया जाता है। देवी सरस्वती कमल के फूल पर विराजमान दिखती हैं। जिस तरह से कमल का फूल पानी में रहता है लेकिन पानी की एक भी बूंद उस पर नहीं रुकती उसी तरह से झूठ, कपट, बुरी संगत जैसी बुराइयों का जीवन में कोई स्थान न रहे।

वसंत पंचमी में सूर्य उत्तरायण होता है, जो यह संदेश देता है कि हमें सूर्य की तरह गंभीर और प्रखर बनना चाहिए। सभी ऋतुओं में वसंत ही ऐसी ऋतु है, जिसमें सभी ऋतुओं की अपेक्षा धरती की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। इस दौरान फसल पकती है। पेड़-पौधां में नई कोपलें फूटती हैं। वसंत पंचमी पर अबूझ मुहूर्त होने के कारण कई जोड़े परिणय सूत्र में बंध जाते हैं। इस दिन अबूझ सावा होता है यानी विवाह के लिए किसी पंडित से मुहूर्त निकलवाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। यह दिन अपने आपमें ही खास माना जाता है तथा इस दिन हुए मांगलिक कार्य जीवन भर शुभता प्रदान करते हैं। वसंत पंचमी यानी प्रकृति के उत्सव का दिन। वीणा वाहिनी माँ सरस्वती की आराधना का यह पर्व मंद-शीतल वायु के प्रवाह, प्रकृति की पीली चुनरी के साथ नए उत्साह के संचार का संदेश लाता है। वसंत पंचमी के पीछे एक मान्यता यह भी है कि इसी दिन भागीरथ की तपस्या के चलते गंगा का अवतरण हुआ था, जिससे समूची धरती खुशहाल हो गई। माघ माह के शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली पंचमी पर गंगा स्नान का काफी महत्व है। वसंत पंचमी के बारे में यह भी मान्यता है कि इस दिन शिवजी ने पार्वती से विवाह के लिए हामी भरी थी। इस दिन शिवजी का लगन चढ़ा था। प्राचीन काल में वसंत पंचमी का दिन मदनोत्सव और वसंतोत्सव के रूप में मनाया जाता था। इस दिन स्त्रियां अपने पति की पूजा कामदेव के रूप में करती थीं। वसंत पंचमी के दिन ही कामदेव और रति ने पहली बार मानव हृदय में प्रेम एवं आकर्षण का संचार किया था और तभी से यह दिन वसंतोत्सव तथा मदनोत्सव के रूप में मनाया जाने लगा। वसंत पंचमी इस बात का संकेत देती है कि धरती से अब शरद की विदाई हो चुकी है और ऐसी ऋतु आ चुकी है जो जीव जंतुओं तथा पेड़-पौधों में नवजीवन का संचार कर देगी। भारतीय संस्कृति में अलग-अलग ऋतुओं का अपना महत्व है। हमारे व्रत और त्योहार ऋतुओं के साथ-साथ चलते हैं। वसंत ऋतु की पंचमी तिथि का अपना पौराणिक और धार्मिक महत्व है। वसंत पंचमी प्रकृति का यौवन है। जिसका रहन-सहन प्रकृति से अलग न पड़ गया हो। जो प्रकृति के रंग में रंग गया हो। वह मनुष्य बिना कहे ही वसंत पंचमी का अनुभव करता है। अलबत्ता वह एक ही समय पर सबके हृदयों में प्रवेश नहीं करता। वसंत पंचमी के दिन से ही होली आरंभ हो जाती है और उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाई जाती है। इस दिन से होली और धमार का गाना प्रारंभ हो जाता है। लोग वासंती वस्त्र धारण कर गायन, वाद्य एवं नृत्य में विभोर हो जाते हैं।

'अयोध्या में रामलला-प्राण-प्रतिष्ठा' महोत्सव

शशिबिन्दु नारायण मिश्र

"रुचिर चौतनीं सुभग सिर, मेचक कुंचित केश।" तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड का यह दोहा हाईस्कूल हिन्दी पाठ्यक्रम में पढ़ाई के दौरान अपने हिंदी शिक्षक से पढ़ा था और जब अध्यापक हुआ तो लगभग 20 वर्षों तक अपने छात्रों को इस प्रसंग को बहुत रुचिपूर्वक पढ़ाया भी। किशोर राम के अपूर्व रूप का वर्णन करते हुए तुलसीदास ने ये पंक्तियां लिखी हैं।

अयोध्या में रामलला के 'नीलाम्बुज श्यामलकोमलाङ्गम्' रूप की प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर राम सौन्दर्य प्रसंग में उक्त दोहा बरबस याद आ रहा है।

प्लेटो का यह कहना कि -"कला सत्य की अनुकृति की अनुकृति है।" महान् दार्शनिक प्लेटो का यह कथन कलाकार के अपूर्व मेधा और कला द्वारा रचित रामलला के इस अलौकिक रूप पर सटीक बैठता है। गर्भगृह में

ड्यूटी दे रहे प्रियवर इंस्पेक्टर महेश यादव जी ने कल और आज सैकड़ों चित्र उपलब्ध कराया। आज पूरा दिन बैचेन रहा / चिंतन में रहा / गर्भगृह के पुलिस उपाधीक्षक से भी घण्टों बात किया। लगा कि यदि प्रभु के चरणों में साहित्य-साधना के दो शब्द अर्पित न हो तो संतोष नहीं मिलेगा। कल पहली बार जब सोशल मीडिया पर ही इस भगवद्विग्रह को देखा तो मन-मयूर नाच उठा। कलाकार ने छेनी-हथौड़ी से रामलला के विग्रह को कैसा जीवन्त कर दिया है। सचमुच में प्राणवन्त कर दिया है। सर्वोत्तम कला तो वही है कि वह कला न लगे, वह सच लगे। कलाकार की कला प्रणम्य है। प्रभु के इस साकार विग्रह के शिल्पी मैसूर निवासी अरुण योगिराज का भी जोरदार नागरिक अभिनन्दन होना चाहिए। ऐसी कला ही मन को उदात्त बनाती है। व्यक्ति को 'स्व' से निकालकर 'वसुधैव- कुटुम्बकम्' से जोड़ती है। राम को हमने इन भौतिक चक्षुओं से कभी देखा तो नहीं है। धर्म ग्रंथों में उनके अलौकिक रूप के बारे में पढ़ा अवश्य है। अनेक श्रेष्ठ लोगों से बचपन से लेकर

अब-तक सुनते रहने के कारण राम के लोकोत्तर कल्याणकारी रूप से अन्तर्मन जुड़ता है। कला तो होती है सबके पास, पर हर किसी को इसका एहसास नहीं होता है। जिस कलाकार ने यह सलोना रूप गढ़ा, वह कितना ऊर्जावान होगा और उसका मन सत्य के कितना निकट होगा। किसी विद्वान् ने कहा है कि यह जीवन, ऊर्जा का महासागर है, जब अन्तश्चेतना जागृत होती है तो ऊर्जा जीवन को कला के रूप में उभारती है और कला जीवन को 'सत्यम्- शिवम्- सुंदरम्' से समन्वित करती है। हमारे ऋषियों-मुनियों ने राम में अनन्त रूप में सत्यं-शिवं-सुंदरम् की अवतारणा की है, उनका यही समन्वित रूप उन्हें ईश्वरत्व प्रदान करता है। महात्मा गाँधी ने सत्य को ही ईश्वर माना और विश्व पटल पर स्थापित हुए। विश्व कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर का यह कहना आज समझ में आ रहा है कि "कला में मनुष्य अपने भावों को अभिव्यक्त करता है।" मैसूर के शिल्पी कलाकार अरुण योगिराज द्वारा सत्य के निकट अपने मानसिक राममय मनोहर कल्पना को साकार विग्रह किया गया है , जो देखते ही बन रहा है।

हमारे ऋषि-मुनियों के पास छेनी हथौड़ी भले ही न रही हो,पर उन्होंने सच्चिदानंद रूप के लिए जो कल्पना तैयार की और उससे जो शब्द चित्र बनाया। उसे पढ़ -सुनकर अपार संतोष और सुकून मिलता है। हम उस पर कुतर्क नहीं कर सकते हैं। वह तो कुतर्कियों का काम है।

कला उस क्षितिज की तरह है,जिसका कोई छोर नहीं है। तभी तो महाराज भतृहरि का कवि-मन कह उठता है --

"साहित्य संगीत-कला विहीन:।

साक्षात् पशु: पुच्छ विषाणहीन:।।"

भाषाविद एवं कवि प्रोफ़ेसर सत्य नारायण त्रिपाठी का एक दोहे के माध्यम से यह कहना युक्तियुक्त ही है कि --

"राम हुए राजा नहीं, विधि ने कर दी घात।

कहा राम ने लखन से,समय-समय की बात।।"

बस समय-समय की ही तो बात होती है। यह समय ही है कि 500 वर्षों के बाद चिर प्रतीक्षा का समय, जब राम को सत्य-स्वरूप, ईश्वर रूप मानने वाला हर जन अपार सुख , संतोष और शांति का अनुभव कर रहा है। जीवन में सांस्कृतिक अभ्युदय भौतिक उन्नति से श्रेयस्कर होता है। आज उस अभ्युदय के हम सब साक्षी बन रहे हैं। यह हम सबका सौभाग्य है। तुलसीदास की निम्न चौपाई से प्रभु राम को शीश नवाता हूँ

"सिया राममय सब जग जानी।

करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी।।"

स्मृतियां

*****

हम कुछ लिखते नहीं है बस अपने
अहसासो को अल्फ़ाज़ देते हैं
बेमुरब्बत सी अपनी इस ज़िंदगी को
जीने के नए-नए अंदाज देते हैं।
दिल में दबे हुए ज़ज़्बातों को काग़ज़ पर
उड़ेलने की ख्वाहिशें अब तो...
दिन में सकूं नहीं देती रात को सोने नहीं देती।
ना -कामे मुहब्बत हमें चैन से जीने नहीं देती
क्या करें, कहां जाये??
इस मतलबी दुनिया में अपना ग़म लेकर
हम किधर जाये?
बेबस से हो जाते है कि आखिर
हम इधर जाये या उधर जाये
सारी रात भींगता रहा मन
साथ गहराती रही स्मृतियां
आंखो से बहते खारे पानी के साथ
भींगता रहा वो सिरहाने लगा तकिया
कोरो से लुढ़कते रहे आंसू और
भींगते रहे खारे पानी से गाल
बीतते चले गए कुछ इसी तरह मेरे
अनमने से दिन महीने साल
एक सुनहरे भोर के इंतजार में
न जाने कबसे, कब तक
बिखरती रही मैं ,भीगता रहा ये मन
जाती नही फिर भी दिल से ये लगन।

सुमन झा माहे

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-9-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 188

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

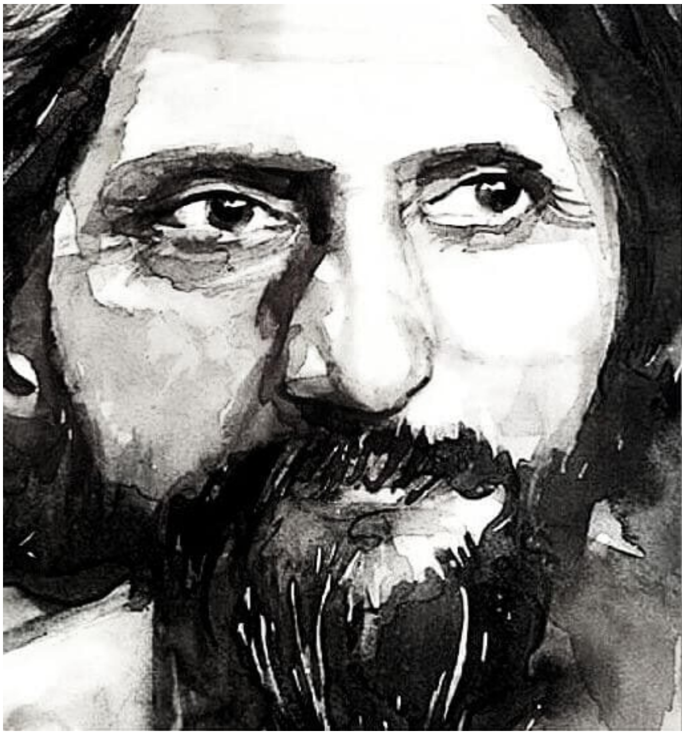

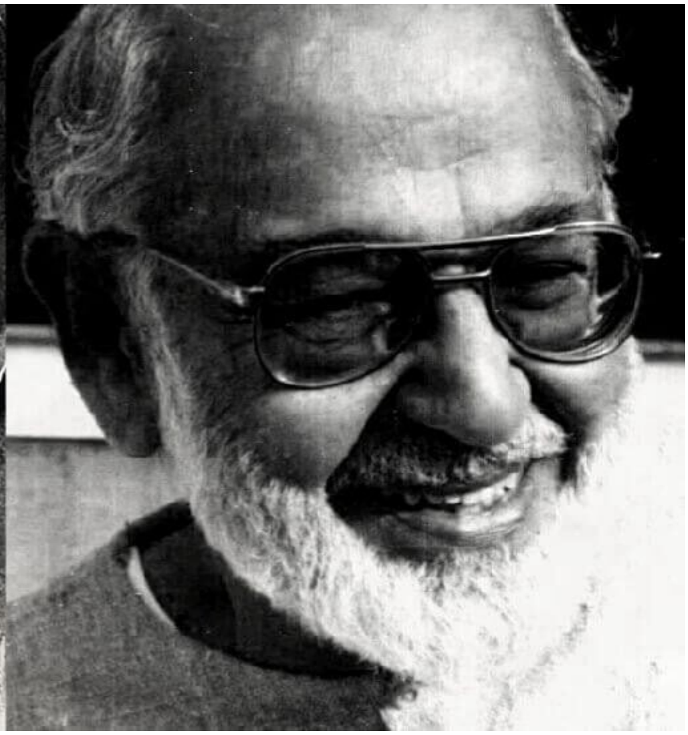

वसंत के अग्रदूत - अज्ञेय

'निराला' जी को स्मरण करते हुए एकाएक शांतिप्रिय द्विवेदी की याद आ जाए, इसकी पूरी व्यंजना तो वही समझ सकेंगे जिन्होंने इन दोनों महान विभूतियों को प्रत्यक्ष देखा था। यों औरों ने शांतिप्रियजी का नाम प्राय: सुमित्रानंदन पंत के संदर्भ में लिया है क्योंकि वास्तव में तो वह पंतजी के ही भक्त थे, लेकिन मैं निरालाजी के पहले दर्शन के लिए इलाहाबाद में पंडित वाचस्पति पाठक के घर जा रहा था तो देहरी पर ही एक सींकिया पहलवान के दर्शन हो गए जिसने मेरा रास्ता रोकते हुए एक टेढ़ी उँगली मेरी ओर उठाकर पूछा, "आपने निरालाजी के बारे में 'विश्वभारती' पत्रिका में बड़ी अनर्गल बातें लिख दी हैं।" यह सींकिया पहलवान, जो यों अपने को कृष्ण-कन्हैया से कम नहीं समझता था और इसलिए हिंदी के सारे रसिक समाज के विनोद का लक्ष्य बना रहता था, शांतिप्रिय की अभिधा का भूषण था।

जिस स्वर में सवाल मुझसे पूछा गया था उससे शांतिप्रियता टपक रही हो ऐसा नहीं था। आवाज़ तो रसिक-शिरोमणि की जैसी थी वैसी थी ही, उसमें भी कुछ आक्रामक चिड़चिड़ापन भरकर सवाल मेरी ओर फेंका गया था। मैंने कहा, "लेख आपने पढ़ा है?"

"नहीं, मैंने नहीं पढ़ा। लेकिन मेरे पास रिपोर्टें आई हैं!"

"तब लेख आप पढ़ लीजिएगा तभी बात होगी," कहक़र मैं आगे बढ़ गया। शांतिप्रियजी की 'युद्धं देहि' वाली मुद्रा एक कुंठित मुद्रा में बदल गई और वह बाहर चले गए।

यों 'रिपोर्टें' सही थीं। 'विश्वभारती' पत्रिका में मेरा एक लंबा लेख छपा था। आज यह मानने में भी मुझे कोई संकोच नहीं है कि उसमें निराला के साथ घोर अन्याय किया गया था। यह बात 1936 की है जब 'विशाल भारत' में पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी निराला के विरुद्ध अभियान चला रहे थे। यों चतुर्वेदी का आक्रोश निरालाजी के कुछ लेखों पर ही था, उनकी कविताओं पर उतना नहीं (कविता से तो वह बिलकुल अछूते थे), लेकिन उपहास और विडंबना का जो स्वर चतुर्वेदीजी की टिप्पणियों में मुखर था उसका प्रभाव निरालाजी के समग्र कृतित्व के मूल्यांकन पर पड़ता ही था और मेरी अपरिपक्व बुद्धि पर भी था ही।

अब यह भी एक रोचक व्यंजना-भरा संयोग ही है कि सींकिया पहलवान से पार पाकर मैं भीतर पहुँचा तो वहाँ निरालाजी के साथ एक दूसरे दिग्गज भी विराजमान थे जिनके ख़िलाफ़ भी चतुर्वेदीजी एक अभियान चला चुके थे। एक चौकी के निकट आमने-सामने 'निराला' और 'उग्र' बैठे थे। दोनों के सामने चौकी पर अधभरे गिलास रखे थे और दोनों के हाथों में अधजले सिगरेट थे।

उग्रजी से मिलना पहले भी हो चुका था; मेरे नमस्कार को सिर हिलाकर स्वीकार करते हुए उन्होंने निराला से कहा, "यह अज्ञेय है।" निरालाजी ने एक बार सिर से पैर तक मुझे देखा। मेरे नमस्कार के

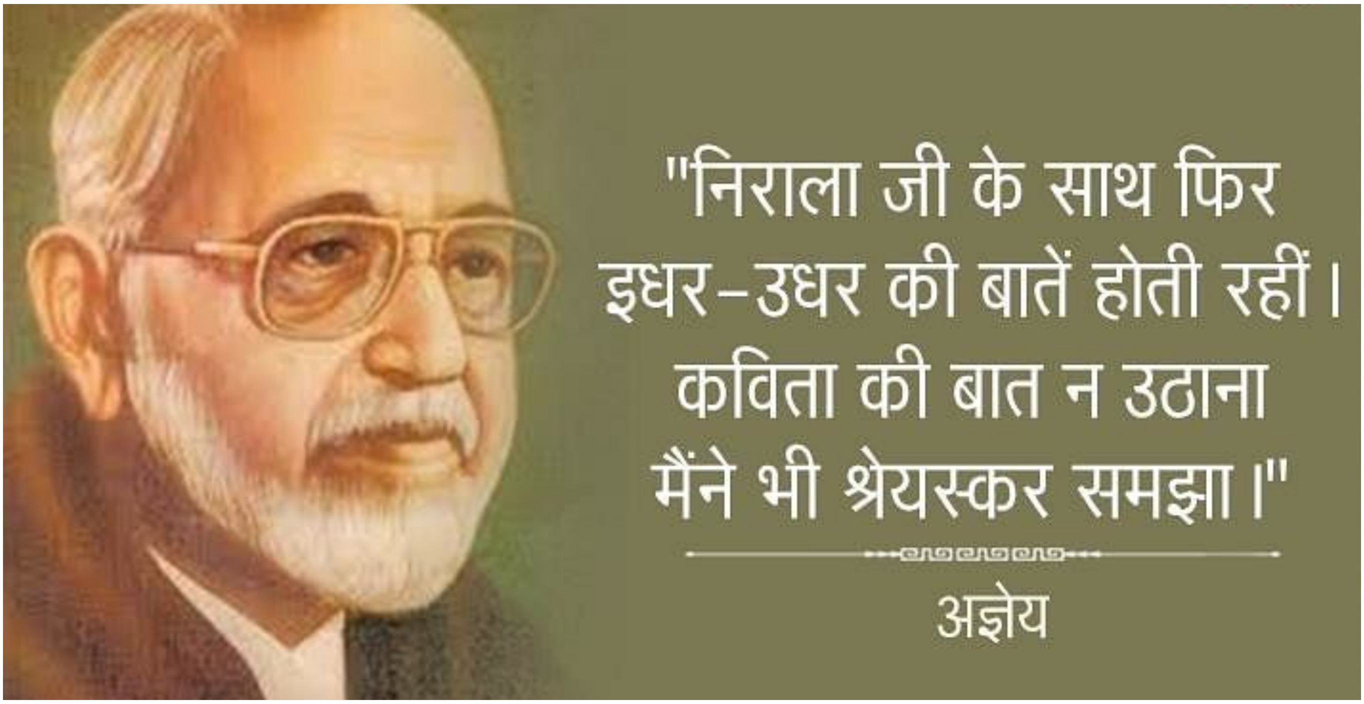

जवाब में केवल कहा, "बैठो।"

मैं बैठने ही जा रहा था कि एक बार फिर उन्होंने कहा, "ज़रा सीधे खड़े हो जाओ।"

मुझे कुछ आश्चर्य तो हुआ, लेकिन मैं फिर सीधा खड़ा हो गया। निरालाजी भी उठे और मेरे सामने आ खड़े हुए। एक बार फिर उन्होंने सिर से पैर तक मुझे देखा, मानो तौला और फिर बोले, "ठीक है।" फिर बैठते हुए उन्होंने मुझे भी बैठने को कहा। मैं बैठ गया तो मानो स्वगत-से स्वर में उन्होंने कहा, "डौल तो रामविलास जैसा ही है।"

रामविलास (डॉ. रामविलास शर्मा) पर उनके गहरे स्नेह की बात मैं जानता था, इसलिए उनकी बात का अर्थ मैंने यही लगाया कि और किसी क्षेत्र में न सही, एक क्षेत्र में तो निरालाजी का अनुमोदन मुझे मिल गया है। मैंने यह भी अनुमान किया कि मेरे लेख की 'रिपोर्ट' अभी उन तक नहीं पहुँची या पहुँचाई गई हैं।

निरालाजी सामान्य शिष्टाचार की बातें करते रहे—क्या करता हूँ, कैसे आना हुआ आदि। बीच में उग्रजी ने एकाएक गिलास की ओर इशारा करते हुए पूछा, "लोगे?" मैंने सिर हिला दिया तो फिर कुछ चिढ़ाते हुए स्वर में बोले, "पानी नहीं है, शराब है, शराब।"

मैंने कहा, "समझ गया, लेकिन मैं नहीं लेता।"

निरालाजी के साथ फिर इधर-उधर की बातें होती रहीं। कविता की बात न उठाना मैंने भी श्रेयस्कर समझा।

थोड़ी देर बाद उग्रजी ने फिर कहा, "जानते हो, यह क्या है? शराब है, शराब।"

अपनी अनुभवहीनता के बावजूद तब भी इतना तो मैं समझ ही सकता था कि उग्रजी के इस आक्रामक रवैये का कारण वह आलोचना और भर्त्सना ही है जो उन्हें वर्षों से मिलती रही है। लेकिन उसके कारण वह मुझे चुनौती दें और मैं उसे मानकर अखाड़े में उतरूँ, इसका मुझे कोई कारण नहीं दीखा। यह भी नहीं कि मेरे जानते शराब पीने का समय शाम का होता, दिन के ग्यारह बजे का नहीं! मैंने शांत स्वर में कहा, "तो क्या हुआ, उग्रजी, आप सोचते हैं कि शराब के नाम से मैं डर जाऊँगा? देश में बहुत से लोग शराब पीते हैं।"

निरालाजी केवल मुस्कुरा दिए, कुछ बोले नहीं। थोड़ी देर बाद मैं विदा लेने को उठा तो उन्होंने कहा, "अबकी बार मिलोगे तो तुम्हारी रचना सुनेंगे।"

मैंने ख़ैर मनाई कि उन्होंने तत्काल कुछ सुनाने को नहीं कहा, "निरालाजी, मैं तो यही आशा करता हूँ कि अबकी बार आपसे कुछ सुनने को मिलेगा।"

आशा मेरी ही पूरी हुई : इसके बाद दो-तीन बार निरालाजी के दर्शन ऐसे ही अवसरों पर हुए जब उनकी कविता सुनने को मिली। ऐसी स्थिति नहीं बनी कि उन्हें मुझसे कुछ सुनने की सूझे और मैंने इसमें अपनी कुशल ही समझी।

इसके बाद की जिस भेंट का उल्लेख करना चाहता हूँ उससे पहले निरालाजी के काव्य के विषय में मेरा मन पूरी तरह बदल चुका था। वह परिवर्तन कुछ नाटकीय ढंग से ही हुआ। शायद कुछ पाठकों के लिए यह भी आश्चर्य की बात होगी कि वह उनकी 'जुही की कली' अथवा 'राम की शक्तिपूजा' पढ़कर नहीं हुआ, उनका 'तुलसीदास' पढ़कर हुआ। अब भी उस अनुभव को याद करता हूँ तो मानो एक गहराई में खो जाता हूँ। अब भी 'राम की शक्तिपूजा' अथवा निराला के अनेक गीत बार-बार पढ़ता हूँ, लेकिन 'तुलसीदास' जब-जब पढ़ने बैठता हूँ तो इतना ही नहीं कि एक नया संसार मेरे सामने खुलता है, उससे भी विलक्षण बात यह है कि वह संसार मानो एक ऐतिहासिक अनुक्रम में

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवज़ा
Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी
ISBN : 978-81-958985-2-7
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 160
Price : 250
Genre : Prose /गद्य

मुआवज़ा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

घटित होता हुआ दीखता है। मैं मानो संसार का एक स्थिर चित्र नहीं बल्कि एक जीवंत चलचित्र देख रहा हूँ। ऐसी रचनाएँ तो कई होती हैं जिनमें एक रसिक हृदय बोलता है। विरली ही रचना ऐसी होती है जिसमें एक सांस्कृतिक चेतना सर्जनात्मक रूप से अवतरित हुई हो। 'तुलसीदास' मेरी समझ में ऐसी ही एक रचना है। उसे पहली ही बार पढ़ा तो कई बार पढ़ा। मेरी बात में जो विरोधाभास है वह बात को स्पष्ट ही करता है। 'तुलसीदास' के इस आविष्कार के बाद संभव नहीं था कि मैं निराला की अन्य सभी रचनाएँ फिर से न पढ़ूँ, 'तुलसीदास' के बारे में अपनी धारणा को अन्य रचनाओं की कसौटी पर कसकर न देखूँ।

अगली जिस भेंट का उल्लेख करना चाहता हूँ उसकी पृष्ठभूमि में कवि निराला के प्रति यह प्रगाढ़ सम्मान ही था। काल की दृष्टि से यह खासा व्यतिक्रम है क्योंकि जिस भेंट की बात मैं कर चुका हूँ, वह सन् 36 में हुई थी और यह दूसरी भेंट सन् 51 के ग्रीष्म में। बीच के अंतराल में अनेक बार अनेक स्थलों पर उनसे मिलना हुआ था और वह एक-एक, दो-दो दिन मेरे यहाँ रह भी चुके थे, लेकिन उस अंतराल की बात बाद में करूँगा।

मैं इलाहाबाद छोड़कर दिल्ली चला आया था, लेकिन दिल्ली में अभी ऐसा कोई काम नहीं था कि उससे बँधा रहूँ; अकसर पाँच-सात दिन के लिए इलाहाबाद चला जाता था। निरालाजी तब दारागंज में रहते थे। मानसिक विक्षेप कुछ बढ़ने लगा था और कभी-कभी वह बिलकुल ही बहकी हुई बातें करते थे, लेकिन मेरा निजी अनुभव यही था कि काफ़ी देर तक वह बिलकुल संयत और संतुलित विचार-विनिमय कर लेते थे; बीच-बीच में कभी बहक़ते भी तो दो-चार मिनट में ही फिर लौट आते थे। मैं शायद उनकी विक्षिप्त स्थिति की बातों को भी सहज भाव से ले लेता था, या बहुत गहरे में समझता था कि जीनियस और पागलपन के बीच का पर्दा काफ़ी झीना होता है—कि निराला का पागलपन 'जीनियस का पागलपन' है, इसीलिए वह भी सहज ही प्रकृतावस्था में लौट आते थे। इतना ही था कि दो-चार व्यक्तियों और दो-तीन संस्थाओं के नाम मैं उनके सामने नहीं लेता था और अँग्रेज़ी का कोई शब्द या पद अपनी बात में नहीं आने देता था—क्योंकि यह मैं लक्ष्य कर चुका था कि इन्हीं से उनके वास्तविकता बोध की गाड़ी पटरी से उतर जाती थी।

उस बार 'सुमन' (शिवमंगल सिंह) भी आए हुए थे और मेरे साथ ही ठहरे थे। मैं निरालाजी से मिलने जानेवाला था और 'सुमन' भी साथ चलने को उत्सुक थे। निश्चय हुआ कि सवेरे-सवेरे ही निरालाजी से मिलने जाया जाएगा—वही समय ठीक रहेगा। लेकिन सुमनजी को सवेरे तैयार होने में बड़ी कठिनाई होती है। पलंग-चाय, पूजा-पाठ और सिंगार-पट्टी में नौ बज ही जाते हैं और उस दिन भी बज गए। हम दारागंज पहुँचे तो प्राय: दस बजे का समय था।

निरालाजी अपने बैठके में नहीं थे। हम लोग वहाँ बैठ गए और उनके पास सूचना चली गई कि मेहमान आए हैं। निरालाजी उन दिनों अपना भोजन स्वयं बनाते थे और उस समय रसोई में ही थे। कोई दो मिनट बाद उन्होंने आकर बैठके में झाँका और बोले, "अरे तुम!" और तत्काल ओट हो गए।

सुमनजी तो रसोई में ख़बर भिजवाने के लिए मेरा पूरा नाम बताने चले गए थे, लेकिन अपने नाम की कठिनाई मैं जानता हूँ इसीलिए मैंने संक्षिप्त सूचना भिजवायी थी कि 'कोई मिलने आए हैं'। क्षणभर की झाँकी में हमने देख लिया कि निरालाजी केवल कौपीन पहने हुए थे। थोड़ी देर बाद आए तो उन्होंने तहमद लगा ली थी और कंधे पर

अँगोछा डाल लिया था।

बातें होने लगीं। मैं तो बहुत कम बोला। यों भी कम बोलता और इस समय यह देखकर कि निरालाजी बड़ी संतुलित बातें कर रहे हैं मैंने चुपचाप सुनना ही ठीक समझा। लेकिन सुमनजी और चुप रहना? फिर वह तो निराला को प्रसन्न देखकर उन्हें और भी प्रसन्न करना चाह रहे थे, इसलिए पूछ बैठे, "निरालाजी, आजकल आप क्या लिख रहे हैं?" यों तो किसी भी लेखक को यह प्रश्न एक मूर्खतापूर्ण प्रश्न जान पड़ता है। शायद सुमन से कोई पूछे तो उन्हें भी ऐसा ही लगे। फिर भी न जाने क्यों लोग यह प्रश्न पूछ बैठते हैं।

निराला ने एकाएक कहा, "निराला, कौन निराला? निराला तो मर गया। निराला इज़ डेड।"

अँग्रेज़ी का वाक्य सुनकर मैं डरा कि अब निराला बिलकुल बहक़ जाएँगे और अँग्रेज़ी में न जाने क्या-क्या कहेंगे, लेकिन सौभाग्य से ऐसा हुआ नहीं। हमने अनुभव किया कि निराला जो बात कह रहे हैं वह मानो सच्चे अनुभव की ही बात है : जिस निराला के बारे में सुमन ने प्रश्न पूछा था वह सचमुच उनसे पीछे कहीं छूट गया है। निराला ने मुझसे पूछा, "तुम कुछ लिख रहे हो?"

मैंने टालते हुए कहा, "कुछ-न-कुछ तो लिखता ही हूँ, लेकिन उससे संतोष नहीं है—वह उल्लेख करने लायक भी नहीं है।"

इसके बाद निरालाजी ने जो चार-छः वाक्य कहे उनसे मैं आश्चर्यचकित रह गया। उन्हें याद करता हूँ तो आज भी मुझे आश्चर्य होता है कि हिंदी काव्य-रचना में जो परिवर्तन हो रहा था, उसकी इतनी खरी पहचान निराला को थी—उस समय के तमाम हिंदी आचार्यों से कहीं अधिक सही और अचूक—और वह तब जब कि ये सारे आचार्य उन्हें कम-से-कम आधा विक्षिप्त तो मान ही रहे थे।

निराला ने कहा, "तुम जो लिखते हो वह मैंने पढ़ा है।" (इस पर सुमन ने कुछ उमँगकर पूछना चाहा था, "अरे निरालाजी, आप अज्ञेय का लिखा हुआ भी पढ़ते हैं?" मैंने पीठ में चिकोटी काटकर सुमन को चुप कराया, और अचरज यह कि वह चुप भी हो गए—शायद निराला की बात सुनने का कुतूहल जयी हुआ) निराला का कहना जारी रहा, "तुम क्या करना चाहते हो वह हम समझते हैं।" थोड़ी देर रुककर और हम दोनों को चुपचाप सुनते पाकर उन्होंने बात जारी रखी। "स्वर की बात तो हम भी सोचते थे। लेकिन असल में हमारे सामने संगीत का स्वर रहता था और तुम्हारे सामने बोलचाल की भाषा का स्वर रहता है।" वह फिर थोड़ा रुक गए; सुमन फिर कुछ कहने को कुलबुलाए और मैंने उन्हें फिर टोक दिया। "ऐसा नहीं है कि हम बात को समझते नहीं हैं। हमने सब पढ़ा है और हम सब समझते हैं। लेकिन हमने शब्द के स्वर को वैसा महत्त्व नहीं दिया, हमारे लिए संगीत का स्वर ही प्रमाण था।" मैं फिर भी चुप रहा, सुनता रहा। मेरे लिए यह सुखद आश्चर्य की बात थी कि निराला इस अंतर को इतना स्पष्ट पहचानते हैं। बड़ी तेज़ी से मेरे मन के सामने उनकी 'गीतिका' की भूमिका और फिर सुमित्रानंदन पंत के 'पल्लव' की भूमिका दौड़ गई थी। दोनों ही कवियों ने अपने प्रारंभिक काल की कविता की पृष्ठभूमि में स्वर का विचार किया था, यद्यपि बिलकुल अलग-अलग ढंग से। उन

भूमिकाओं में भी यह स्पष्ट था कि निराला के सामने संगीत का स्वर है, कविता के स्वर और ताल का विचार वह संगीत की भूमि पर खड़े होकर ही करते हैं; जबकि स्वर और स्वर-मात्रा के विचार में पंत के सामने संगीत का नहीं, भाषा का ही स्वर था और सांगीतिकता के विचार में भी वह व्यंजन-संगीत से हटकर स्वर-संगीत को वरीयता दे रहे थे। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि 'पल्लव' के पंत, 'गीतिका' के निराला से आगे या अधिक 'आधुनिक' थे। लेकिन जिस भेंट का उल्लेख मैं कर रहा हूँ उसमें निराला का स्वर-संवेदन कहीं आगे था जबकि उस समय तक पंत अपनी प्रारंभिक स्थापनाओं से न केवल आगे नहीं बढ़े थे बल्कि कुछ पीछे ही हटे थे (और फिर पीछे ही हटते गए)। उस समय का नए से नया कवि भी मानने को बाध्य होता कि अगर कोई पाठक उसके स्वर से स्वर मिलाकर उसे पढ़ सकता है तो वह आदर्श सहृदय पाठक निराला ही है। एक पीढ़ी का महाकवि परवर्ती पीढ़ी के काव्य को इस तरह समझ सके, परवर्ती कवि के लिए इससे अधिक आप्यायित करनेवाली बात क्या हो सकती है।

सुमन ने कहा, "निरालाजी, अब इसी बात पर अपना एक नया गीत सुना दीजिए।"

मैंने आशंका-भरी आशा के साथ निराला की ओर देखा। निराला ने अपनी पुरानी बात दोहरा दी, "निराला इज़ डेड। आई एम नॉट निराला!"

सुमन कुछ हार मानते हुए बोले, "मैंने सुना है, आपकी नई पुस्तक आई है 'अर्चना'। वह आपके पास है—हमें दिखाएँगे?"

निराला ने एक वैसे ही खोये हुए स्वर में कहा, "हाँ, आई तो है, देखता हूँ।" वह उठकर भीतर गए और थोड़ी देर में पुस्तक की दो प्रतियाँ ले आए। बैठते हुए उन्होंने एक प्रति सुमन की ओर बढ़ायी जो सुमन ने ले ली। दूसरी प्रति निराला ने दूसरे हाथ से उठायी, लेकिन मेरी ओर बढ़ायी नहीं, उसे फिर अपने सामने रखते हुए बोले, "यह तुमको दूँगा।" सुमन ने ललककर कहा, "तो यह प्रति मेरे लिए है? तो इसमें कुछ लिख देंगे?"

निराला ने प्रति सुमन से ले ली और आवरण खोलकर मुखपृष्ठ की ओर थोड़ी देर देखते रहे। फिर पुस्तक सुमन को लौटाते हुए बोले, "नहीं, मैं नहीं लिखूँगा। वह निराला तो मर गया।"

सुमन ने पुस्तक ले ली, थोड़े-से हतप्रभ तो हुए, लेकिन यह तो समझ रहे थे कि इस समय निराला को उनकी बात से डिगाना संभव नहीं होगा।

निराला फिर उठकर भीतर गए और कलम लेकर आए। दूसरी प्रति उन्होंने उठायी, खोलकर उसके पुश्ते पर कुछ लिखने लगे। मैं साँस रोककर प्रतीक्षा करने लगा। मन तो हुआ कि ज़रा झुककर देखूँ कि क्या लिखने जा रहे हैं, लेकिन अपने को रोक लिया। कलम की चाल से मैंने अनुमान किया कि कुछ अँग्रेज़ी में लिख रहे हैं।

दो-तीन पंक्तियाँ लिखकर उनका हाथ थमा। आँख उठाकर एक बार उन्होंने मेरी ओर देखा और फिर कुछ लिखने लगे। इसी बीच सुमन ने कुछ इतराते हुए-से स्वर में कहा, "निरालाजी, इतना पक्षपात? मेरे लिए तो आपने कुछ लिखा नहीं और..."

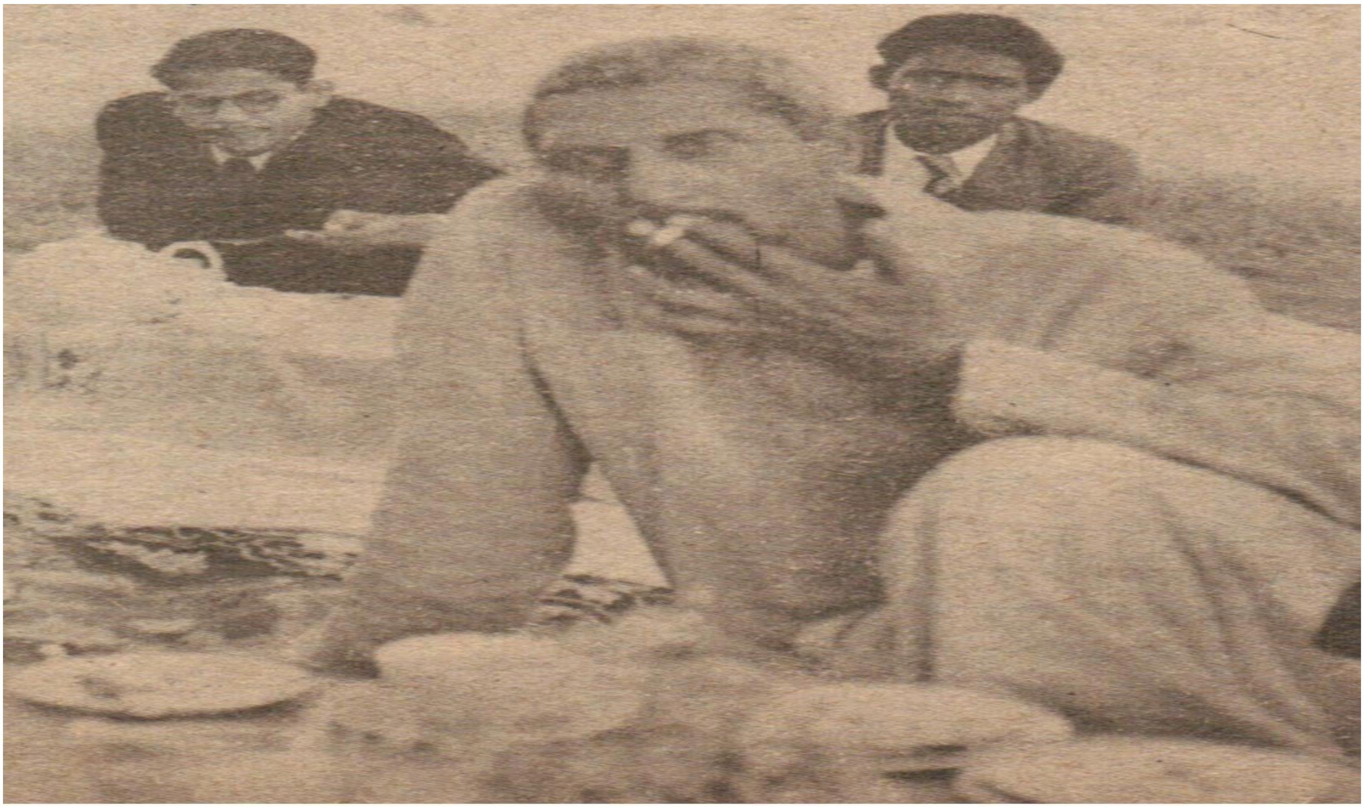

निरालाजी ने एक-दो अक्षर लिखे थे; लेकिन सुमन की बात पर चौंककर रुक गए। उन्होंने फिर कहा, "नहीं, नहीं, निराला तो मर गया। देयर इज नो निराला। निराला इज़ डेड।"

अब मैंने देखा कि पुस्तक में उन्होंने अँग्रेज़ी में नाम के पहले दो अक्षर लिखे थे-एन, आई, लेकिन अब उसके आगे दो बिंदियाँ लगाकर नाम अधूरा छोड़ दिया, नीचे एक लकीर खींची और उसके नीचे तारीख़ डाली 18-5-51 और पुस्तक मेरी ओर बढ़ा दी।

पुस्तक मैंने ले ली। तत्काल खोलकर पढ़ा नहीं कि उन्होंने क्या लिखा है। निराला ने इसका अवसर भी तत्काल नहीं दिया। खड़े होते हुए बोले : "तुम लोगों के लिए कुछ लाता हूँ।"

मैंने बात की व्यर्थता जानते हुए कहा, "निरालाजी, हम लोग अभी नाश्ता करके चले थे, रहने दीजिए।" और इसी प्रकार सुमन ने भी जोड़ दिया, "बस, एक गिलास पानी दे दीजिए।"

"पानी भी मिलेगा," कहते हुए निराला भीतर चले गए। हम दोनों ने अर्थभरी दृष्टि से एक-दूसरे को देखा। मैंने दबे स्वर में कहा, "इसीलिए कहता था कि सवेरे जल्दी चलो।"

फिर मैंने जल्दी से पुस्तक खोलकर देखा कि निरालाजी ने क्या लिखा था। कृतकृत्य होकर मैंने पुस्तक फुर्ती से बंद की तो सुमन ने उतावली से कहा, "देखें, देखें..."

मैंने निर्णयात्मक ढंग से पुस्तक घुटने के नीचे दबा ली, दिखाई नहीं। घर पहुँचकर भी देखने का काफ़ी समय रहेगा।

इस बीच निराला एक बड़ी बाटी में कुछ ले आए और हम दोनों के बीच बाटी रखते हुए बोले, "लो, खाओ, मैं पानी लेकर आता हूँ," और फिर भीतर लौट गए।

बाटी में कटहल की भुजिया थी। बाटी में ही सफाई से उसके दो हिस्से कर दिए गए थे।

निराला के लौटने तक हम दोनों रुके रहे। यह क्लेश हम दोनों के मन में था कि निरालाजी अपने लिए जो भोजन बना रहे थे वह सारा-का-सारा उन्होंने हमारे सामने परोस दिया और अब दिन-भर भूखे रहेंगे। लेकिन मैं यह भी जानता था कि हमारा कुछ भी कहना व्यर्थ होगा—निराला का आतिथ्य ऐसा ही जालिम आतिथ्य है। सुमन ने कहा, "निरालाजी, आप..."

"हम क्या?"

"निरालाजी, आप नहीं खाएँगे तो हम भी नहीं खाएँगे।"

निरालाजी ने एक हाथ सुमन की गर्दन की ओर बढ़ाते हुए कहा, "खाओगे कैसे नहीं? हम गुद्दी पकड़कर खिलाएँगे।"

सुमन ने फिर हठ करते हुए कहा, "लेकिन, निरालाजी, यह तो आपका भोजन था। अब आप क्या उपवास करेंगे?"

निराला ने स्थिर दृष्टि से सुमन की ओर देखते हुए कहा, "तो भले आदमी, किसी से मिलने जाओ तो समय-असमय का विचार भी तो करना होता है।" और फिर थोड़ा घुड़ककर बोले : "अब आए हो तो भुगतो।"

हम दोनों ने कटहल की वह भुजिया किसी तरह गले से नीचे उतारी। बहुत स्वादिष्ट बनी थी, लेकिन उस समय स्वाद का विचार करने की हालत हमारी नहीं थी।

जब हम लोग बाहर निकले तो सुमन ने खिन्न स्वर में कहा, "भाई, यह तो बड़ा अन्याय हो गया।"

मैंने कहा, "इसीलिए मैं कल से कह रहा था कि सवेरे जल्दी चलना है, लेकिन आपको तो सिंगार-पट्टी से और कोल्ड-क्रीम से फ़ुरसत मिले तब तो! नाम 'सुमन' रख लेने से क्या होता है अगर सवेरे-सवेरे सहज खिल भी न सकें!"

यों हम लोग लौट आए। घर आकर फिर अर्चना की मेरी प्रति खोलकर हम दोनों ने पढ़ा। निराला ने लिखा था :

To Ajneya,
the Poet, Writer and Novelist
in the foremost rank.
Ni...
18.5.51

सन् '36 और सन् '51 के बीच, जैसा मैं पहले कह चुका हूँ, निरालाजी से अनेक बार मिलन हुआ। उनके 'तुलसीदास' का पहला प्रकाशन 1938 में हुआ था और मैंने उनकी रचनाओं के बारे में अपनी धारणा के आमूल परिवर्तन की घोषणा रेडियो से जिस समीक्षा में की थी उसका प्रसारण शायद 1940 के आरंभ में हुआ था। मेरठ में 'हिंदी साहित्य परिषद्' के समारोह के लिए मैंने उन्हें आमंत्रित किया तो आमंत्रण उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया और मेरठ के प्रवास में वह कुछ समय श्रीमती होमवती देवी के यहाँ और कुछ समय मेरे यहाँ ठहरे। होमवतीजी उस समय परिषद् की अध्यक्षा भी थीं और निरालाजी को अपने यहाँ ठहराने की उनकी हार्दिक इच्छा थी। जिस बँगले में वह रहती थीं उसके अलावा एक और बँगला उनके पास था जो उन दिनों आधा खाली था और निरालाजी के वहीं ठहरने की व्यवस्था की गई। वह बँगला होमवतीजी के आवास से सटा हुआ होकर भी अलग था, इसलिए सभी आश्वस्त थे कि अतिथि अथवा आतिथेय को कोई असुविधा नहीं होगी—यों थोड़ी चिंता भी थी कि होमवतीजी के परम वैष्णव संस्कार निरालाजी की आदतों को कैसे सँभाल पाएँगे। मेरा घर वहाँ से तीन-एक फर्लांग दूर था और छोटा भी था; सुमन, प्रभाकर माचवे और भारतभूषण अग्रवाल को मेरे यहाँ ठहराने का निश्चय हुआ था।

होमवतीजी ने श्रद्धापूर्वक निरालाजी को ठहरा तो लिया, लेकिन दोपहर का भोजन उन्हें कराने के बाद वह दौड़ी हुई मेरे यहाँ आयीं। "भाई जी, शाम का भोजन क्या होगा? लोग तो कह रहे हैं कि निरालाजी तो शाम को शराब के बिना भोजन नहीं करते और भोजन भी माँस के बिना नहीं करते। हमारे यहाँ तो यह सब नहीं चल सकता।

और फिर अगर हम उधर अलग इंतज़ाम करें भी तो लाएगा कौन और सँभालेगा कौन?"

यह कठिनाई होने वाली है इसका हमें अनुमान तो था, लेकिन होमवतीजी के उत्साह और उनकी स्नेहभरी आदेशना के सामने कोई बोला नहीं था।

उन्हें तो किसी तरह समझा-बुझाकर लौटा दिया गया कि हम लोग कुछ व्यवस्था कर लेंगे, उन्हें इसमें नहीं पड़ना होगा। संयोजकों में शराब से परिचित कोई न हो ऐसा तो नहीं था। शाम को एक अद्धा निरालाजी की सेवा में पहुँचा दिया गया और निश्चय हुआ कि भोजन कराने भी उन्हें सदर के होटल में ले जाया जाएगा।

इधर हम लोग शाम का भोजन करने बैठे ही थे कि होटल से लौटते हुए निरालाजी मेरे यहाँ आ गए। (मैं दूसरी मंजिल पर रहता था।) पता लगा कि उन्होंने ही सीधे बँगले पर न लौटकर मेरे यहाँ आने की इच्छा प्रकट की थी। सुरूर की जिस हालत में वह थे उससे मैंने यह अनुमान किया कि ऐसा निरालाजी ने इसीलिए किया होगा कि वह उस हालत में होमवतीजी के सामने नहीं पड़ना चाहते थे। (मैंने दूसरे अवसरों पर भी लक्ष्य किया कि ऐसे मामलों में उनका शिष्ट आचरण का संस्कार बड़ा प्रबल रहता था।) लेकिन यहाँ पर भी मेरी बहिन अतिथियों को भोजन करा रही थीं, इससे निरालाजी को थोड़ा असमंजस हुआ। वह चुपचाप एक तरफ़ एक खाट पर बैठ गए। हम लोगों ने भोजन जल्दी समाप्त करके उनका मन बहलाने की कोशिश की, लेकिन वह चुप ही रहे। एक-आध बार 'हूँ' से अधिक कुछ बोले नहीं। उनसे जो बात करता उसकी ओर एकटक देखते रहते मानो कहना चाहते हों, "हम जानते हैं कि हमें बहलाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन हम बहलेंगे नहीं।"

एकाएक निरालाजी ने कहा, "सुमन, इधर आओ।" सुमनजी उनके समीप गए तो निराला ने उनकी कलाई पकड़ ली और कहा, "चलो।"

"कहाँ, निरालाजी?"

"घूमने।" सुमन ने बेबसी से मेरी ओर देखा। वह भी जानते थे कि छुटकारा नहीं है और मैं भी समझ गया कि बहस व्यर्थ होगी। नीचे उतरकर मैं एक बढ़िया-सा ताँगा बुला लाया। निरालाजी सुमन के साथ उतरे और उस पर आगे सवार होने लगे तो ताँगेवाले ने टोकते हुए कहा, "सरकार, घोड़ा दब जाएगा-आप पीछे बैठें और आपके साथी आगे बैठ जाएँगे।"

निरालाजी क्षण ही भर ठिठके। फिर अगली तरफ़ ही सवार होते हुए बोले, "ये पीछे बैठेंगे, ताँगा दबाऊ होता है तो तुम भी पीछे बैठकर चलाओ। नहीं तो रास हमें दो-हम चलाएँगे।"

ताँगेवाले ने एक बार सबकी ओर देखकर हुक्म मानना ही ठीक समझा। वह भी पीछे बैठ गया, रास उसने नहीं छोड़ी। पूछा, "कहाँ चलना होगा, सरकार?"

निरालाजी ने उसी आज्ञापना भरे स्वर में कहा, "देखो, दो घंटे तक यह सवाल हमसे मत पूछना। जहाँ तुम चाहो लेते चलो। अच्छी सड़कों पर सैर करेंगे। दो घंटे बाद इसी जगह पहुँचा देना, पैसे पूरे मिलेंगे।"

ताँगेवाले ने कहा, 'सरकार' और ताँगा चल पड़ा। मैं दो घंटे के लिए निश्चिंत होकर ऊपर चला आया।

रात के लगभग बारह बजे ताँगा लौटा और सुमन अकेले ऊपर आए। निरालाजी देर से लौटने पर वहीं सो सकते हैं, यह सोचकर उनके लिए एक बिस्तर और लगा दिया गया था, लेकिन सुमन ने बताया कि निरालाजी सोएँगे तो वहीं जहाँ ठहरे हैं क्योंकि होमवतीजी से कहक़र नहीं आए थे। लिहाजा मैंने उसी ताँगे में उन्हें बँगले पर पहुँचा दिया और टहलता हुआ पैदल लौट आया।

अगले दिन सवेरे ही होमवतीजी के यहाँ देखने गया कि सब कुछ ठीक-ठाक तो है, तो होमवतीजी ने अलग ले जाकर मुझे कहा, "भैया, तुम्हारे कविजी ने कल शाम को बाहर जो किया हो, यहाँ तो बड़े शांत भाव से, शिष्ट ढंग से रहते हैं।"

मैंने कहा, "चलिए, आप निश्चिंत हुईं तो हम भी निश्चिंत हुए। यों डरने की कोई बात थी नहीं।"

दूसरे दिन मैं शाम से ही निरालाजी को अपने यहाँ ले आया। भोजन उन्होंने वहीं किया और प्रसन्न होकर कई कविताएँ सुनायीं। काश कि उन दिनों टेप रिकार्डर होते-'राम की शक्तिपूजा' अथवा 'जागो फिर एक बार' अथवा 'बादल राग' के वे वाचन परवर्ती पीढ़ियों के लिए संचित कर दिए गए होते। प्राचीन काल में काव्य-वाचक जैसे भी रहे हों, मेरे युग में तो निराला जैसा काव्य-वाचक दूसरा नहीं हुआ।

रघुवीर सहाय ने लिखा है, "मेरे मन में पानी के कई संस्मरण हैं।" निराला के काव्य को अजस्र निर्झर मानकर मैं भी कह सकता हूँ कि 'मेरे मन में पानी के अनेक संस्मरण हैं— अजस्र बहते पानी के, फिर वह बहना चाहे मूसलाधार वृष्टि का हो, चाहे धुआँधार जल-प्रपात का, चाहे पहाड़ी नदी का, क्योंकि निराला जब कविता पढ़ते थे तब वह ऐसी ही वेगवती धारा-सी बहती थी। किसी रोक की कल्पना भी तब नहीं की जा सकती थी—सरोवर-सा ठहराव उनके वाचन में अकल्पनीय था।'

और क्योंकि पानी के अनेक संस्मरण हैं, इसलिए उन्हें दोहराऊँगा नहीं।

उन्हीं दिनों के आसपास उनसे और भी कई बार मिलना हुआ; दिल्ली में वह मेरे यहाँ आए थे और दिल्ली में एकाधिक बार उन्होंने मेरे अनुरोध किये बिना ही सहज उदारतावश अपनी नई कविताएँ सुनाईं। फिर इलाहाबाद में भी जब-तब मिलना होता; पर कविता सुनने का ढंग का अवसर केवल एक बार हुआ क्योंकि इलाहाबाद में धीरे-धीरे एक अवसाद उन पर छाता गया था जो उन्हें अपने परिचितों के बीच रहते भी उनसे अलग करता जा रहा था। पहले भी उन्होंने गाया था :

मैं अकेला
देखता हूँ आ रही
मेरी दिवस की सांध्य वेला।
... ...
जानता हूँ नदी झरने

जो मुझे थे पार करने
कर चुका हूँ
हँस रहा यह देख
कोई नहीं भेला।

अथवा

स्नेह निर्झर बह गया है
रेत-सा तन रह गया है
बह रही है हृदय पर केवल अमा
मैं अलक्षित हूँ, यह
कवि कह गया है।

लेकिन इन कविताओं के अकेलेपन अथवा अवसाद का स्वर एकसंचारी भाव का प्रतिबिंब है जिससे दूसरे भी कवि परिचित होंगे। इसके अनेक वर्ष बाद के,
बाँधो न नाव इस ठाँव, बंधु
पूछेगा सारा गाँव, बंधु!
का अवसाद मानो एक स्थायी मनोभाव है। पहले का स्वर केवल एक तात्कालिक अवस्था को प्रकट करता है जैसे और भी पहले की 'सखि वसंत आया' अथवा 'सुमन भर न लिए, सखि वसंत गया' आदि कविताएँ प्रतिक्रिया अथवा भावदशा को दर्शाती है। लेकिन 'अर्चना' और उसके बाद की कविताओं में हताश अवसाद का जो भाव छाया हुआ दीखता है वह तत्कालीन प्रतिक्रिया का नहीं, जीवन के दीर्घ प्रत्यवलोकन का परिणाम है जिससे निराला जब-तब उबरते दीखते हैं तो अपने भक्ति-गीतों में ही:
तुम ही हुए रखवाल
तो उसका कौन न होगा।

अथवा

वे दुख के दिन
काटे हैं जिसने
गिन-गिनकर
पल-छिन, तिन-तिन
आँसू की लड़ के मोती के
हार पिरोये
गले डालकर प्रियतम के
लखने को शशि मुख
दु:खनिशा में
उज्ज्वल, अमलिन।

कह नहीं सकता, इस स्थायी भाव के विकास में कहाँ तक महादेवीजी द्वारा स्थापित साहित्यकार संसद के उनके प्रवास ने योग दिया जिसमें निराला के सम्मान में दावतें भी हुईं तो मानो ऐसी ही जो उन्हें हिंदी कवि-समाज के निकट न लाकर उससे थोड़ा और अलग ही कर गईं। संसद के गंगा तटवर्ती बँगले को छोड़कर ही निरालाजी फिर दारागंज की अपनी पुरानी कोठरी में चले गए; वहीं अवसाद और भक्ति का यह मिश्र स्वर मुखरतर होता गया। और वहीं गहरे धुँधलके और तीखे प्रकाश के बीच भँवराते हुए निराला उस स्थिति की ओर बढ़ते गए जहाँ एक ओर वह कह सकते थे, "कौन निराला? निराला इज़ डेड!" और दूसरी ओर दृढ़ विश्वासपूर्वक 'हिंदी के सुमनों के प्रति' संबोधित होकर एक आहत किंतु अखंड आत्मविश्वास के साथ यह भी कह सकते थे, "मैं ही वसंत का अग्रदूत"। सचमुच वसंत पंचमी के दिन जन्म लेनेवाले निराला हिंदी काव्य के वसंत के अग्रदूत थे। लेकिन अब जब वह नहीं हैं तो उनकी कविताएँ बार-बार पढ़ते हुए मेरा मन उनकी इस आत्मविश्वास भरी उक्ति पर न अटककर उनके 'तुलसीदास' की कुछ पंक्तियों पर ही अटकता है जहाँ मानो उनका कवि भवितव्यदर्शी हो उठता है—उस भवितव्य को देख लेता है जो खंडकाव्य के नायक तुलसीदास का नहीं, उसके रचयिता निराला का ही है :
यह जागा कवि अशेष छविधर
इसका स्वर भर भारती मुक्त होएँगी
... ...
तम के अमाज्य रे तार-तार
जो, उन पर पड़ी प्रकाश धार
जग वीणा के स्वर के बहार रे जागो;
इस पर अपने कारुणिक प्राण
कर लो समक्ष देदीप्यमान-
दे गीत विश्व को रुको, दान फिर माँगो।
इस अशेष छविधर कवि ने दान कभी नहीं माँगा, पर विश्व को दिया—गीत दिया, पर उसके लिए भी रुका नहीं, बाँटते-बाँटते ही तिरोधान हो गया: मैं अलक्षित रहूँ, यह कवि कह गया है।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।
प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

गिद्धों के बीच

लघुकथा / अजय रोहिल्ला

दिल्ली की सर्दियों की रात थी। आखिरी बस के इंतज़ार में बस स्टैंड पर वो लड़की अपने हमउम्र लड़कों के समूह में हंसी-ठिठोली कर रही थी।
समूह में अकेली होने के कारण स्वयं को मिलने वाली विशेष अटेंशन को भी खूब एन्जॉय कर रही थी।
रह-रह कर उसकी हँसी चारों तरफ गूंज जाती।

बस स्टैंड के दूसरे छोर पर एक गंजेड़ी बैठा था। उसके साथ था, उसका नया-नया बना मित्र।
मित्र गांजा नहीं पीता था। वो एक छोटे-से राज्य से महानगर में नया-नया आया था। उसके लिए देर रात सड़कों पर किसी अकेली जवान लड़की का लड़कों के साथ यूँ खुलकर हंसना, मस्ती करना किसी अजूबे से कम ना था।
गंजेड़ी तो 'कोउ कोई नृप होइ हमें का हानी' वाले भाव में रहता था, अपने में मस्त।
वो अपने में मस्त और ये उस लड़की और उसके दोस्तों को देख हैरान-परेशान।
दूर से देखने पर लगता कि ये दो अलग अलग समूह हैं पर कभी-कभार दोनों समूह एक दूसरे की ओर जाने-अनजाने देख भी लेते थे जिससे पता लगता कि वो सभी एक-दूसरे को जानते हैं।
शायद सभी एकत-दूसरे के साथ बहुत कम्फर्टेबल नहीं हैं।
गंजेड़ी और उसका साथी साथ जरूर थे, पर उनमें कोई बात नहीं हो रही थी।
बहुत देर तक हैरान-परेशान रहने के बाद गंजेड़ी के साथी ने उससे कहा, "गुरु ,ये लड़की इन सब लड़को को उल्लू बना रही है। "
गंजेड़ी ने कोई जबाब ना दिया, बस हल्के से मुस्करा दिया। ना जाने किन ख्यालों में रहता था वो।

कुछ दिनों बाद उसी बस स्टैंड पर, रात के लगभग उसी समय यानी अंतिम बस के इन्तज़ार में थे ये सभी।
बस स्टैंड के अपने फिक्स कौने पर गंजेड़ी और अपने कोने पर लड़की। पर दोनों के पार्टनर्स बदल गए थे।
वो, जो कुछ दिन पहले गंजेड़ी के साथ बैठा था, अब वो लड़की के साथ बैठ खुसुर-पुसुर कर रहा था; और उस रात लड़की के साथ हंसी-ठिठोली करने वाले लड़के गंजेड़ी के पास गम्भीर मुद्रा बनाये बैठे थे। कभी-कभार वो आपस में कुछ ना-ज़रूरी सी बात भी कर लेते। और जहां तक सवाल है गंजेड़ी का, तो उसका होना, ना होना सब एक-बराबर, पहले भी और आज भी।

तभी गंजेड़ी के पास बैठे लड़कों के समूह में से एक टीम लीडर टाइप लड़का गंजेड़ी को सुनाते हुए बड़बड़ाया--"ये लौंडिया इस लौंडे का उल्लू काट रही है।"
गंजेड़ी फिर खुद में मुस्कराया और चुप बैठा रहा।

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : जीवन उल्लास
Author डॉ सत्या सिंह
ISBN : 978-81-958985-3-4
Language : हिन्दी
Year of Publication :2023
Page Numbers : 108
Price : 250/-
Genre Poetry : कविता

जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

गुन ना हिरानो गुन गाहक हिरानो है। इस भावना के साथ मित्रो! मेरी इस रचना के तुकान्त न देखते हुए इसके लय विधान को देखें यह आठ सोलह व बत्तीस मात्राओं के अनुशासन में मत्त सवैया के प्रवाह में छन्दबद्ध किन्तु एक अतुकान्त रचना है। केवल एक बार पढ़ जाएँ। कविता ऐसे भी होती है। आनन्द लें व आशीष दें।

समझो द्वारे पर है बसन्त

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण'

मद्धिम कुहरे की छटा चीर पूरब से आते रश्मिरथी उनके स्वागत में भर उड़ान आकाश भेदते कलरव से खग वंश बेलि के उच्चारण जब अर्थ बदलने लगें और बहुरंग तितलियाँ चटक-मटक आ फूल-फूल पर मँडराएँ जब मौन तोड़ कोयलें गीत अमराई में गा उठें और मधुकर के गुंजित राग उठें पड़कुलिया गमकाए ढोलक जब झाँझ बजाएँ मैनाएं बज उठें मँजीरों सी फसलें लग उठे तबलची सा बैठा कर उठे गुटुर गूँ हर कपोत मोरनी मोर का नाच देख इतराने लगे बगीचे में महुआ मदमाता हुआ कहे टेसू का लाल सुर्ख चेहरा पी रहा धरा की हरियाली सर्वथा नवीना कली-कली सुषमा बिखेरती हो कदली पियराई सरसों फूल बिछा खेतों में अँगडाई लेती विटपों से लिपटीं लतिकाएँ आलिंगन करतीं लगतीं हों, चुम्बन पर चुम्बन जड़तीं हों। समझो द्वारे पर है बसन्त।।

जब सघन वनों के बीच-बीच गायों के गोबर से लीपे आश्रम के आँगन -आँगन में घी सनी बनी हवि समिधा से हो उठे हवन में सन्तों की आहुतियों से उठ रहा धुआँ जब मन्द-मन्द ले उड़े पवन बिखराता जाए दिग्दिगन्त उल्लासभरी तरुणाई पर छा उठे जोश नव यौवन का खुशबू बिखेरती मलिकाएँ मुस्कातीं आतीं लगतीं हों, जब रंग-बिरंगे फूलों की मदमाती झूमा-झटकी में मचलीं हों कलियाँ खिलने को खिलखिला उठे सौन्दर्य स्वयं हो उठे मनोहारी पीपल हर दृष्टि सुहानी सृष्टि देख जागे विवेक हर लेख लेख कर उठे समीक्षा सौरभ की धरती माता के गौरव की पतझड़ से उजड़े वन-वन में समिधाएँ आने लगतीं हों शुचिताएँ छाने लगतीं हों, अमराई की शाखाओं सी बहियाँ बौराई लगतीं हों, नदियाँ कृशकायी लगतीं हों, समझो द्वारे पर है बसन्त।।

कह उठे गगन हा रसा! रसा! हर वसन लगे जब कसा कसा हो दिशा दिशा की एक दशा तन पर मादकता भरा नशा वाणी अवाक् रह जाती हो बिन कहे अदा कह जाती हो संकेत मुखर हो जाते हों अरमान शिखर हो जाते हों हर ओर-छोर तक पोर-पोर बासन्ती रँग में बोर-बोर सौन्दर्यलोक की वही दृष्टि रचने को आतुर नई सृष्टि गाते हों किन्नर-

किन्नरियाँ हर तरह अनूठी अलसातीं आनन्द लुटातीं इठलातीं सम्मोहित करतीं बल्लरियाँ, कल्पनातीत तरुणाई में लटका ललनाएँ झल्लरियाँ जब दबा-दबा कर ओठों से सकुचाई सीं बौराई सीं मदिराई सीं भरमाई सीं घर में आई सीं लगती हों, गलियाँ गदराई लगतीं हों रक्तिमाहरित कोपलें उमग विटपों पर कौतूहल करतीं कुछ मस्तातीं कुछ सुस्तातीं उल्लास जगातीं बलखातीं सकुचातीं आईं लगतीं हों, समझो द्वारे पर है बसन्त।।

गुनगुनी धूप शीतल समीर मन मुदित किन्तु आधा अधीर सुखदाई कुछ -कुछ दुखदाई पीताभ पल्लवों की लड़ियाँ धरती पर गिरतीं झूम-झूम लावण्यमयी मिष्ठास प्रबल होती हो कड़वी पर हलचल आकर्षण और विकर्षण की बेलाएँ सजतीं लगतीं हों, खारीं लहराई लगती हों आलाप टिटहरी का सुनकर गा उठे पपीही पिया पिया बिरहिनि के मन में उठे हूक हो उठे कलेजा टूक-टूक गाती हो कोयल कूक-कूक चातक जाता हो चूक-चूक विधवा-सधवा की छिड़े जंग उड़ चले कहीं चढ़ उठे रंग चिकनी चिकनी हर देह एक बदलाव लिए जब मटक-मटक चटकीले मटके सी फूली फूलों की डाली से बोले रंगीन मिजाजी मंजरियाँ मरुथल में जैसे जल परियाँ ओढ़े बासन्ती चूनरियाँ मदमाती आती कर्तरियां बिन ब्याहीं युवती सुन्दरियाँ सामाजिक भय से डरीं-डरीं प्रेमी से जाकर दूर खड़ीं उन्मन अलसाई लगतीं हों हारीं हरजाई लगतीं हों नतमुख शरमाई लगतीं हों, समझो द्वारे पर है बसन्त।।

जब हो निरभ्र आकाश और तारों से जड़ी हुई चूनर ओढ़े बैठी हो नत रजनी टकटकी लगा कर कामदग्ध कर उठे प्रतीक्षा शशि वर की आते निहारने लगे तभी सौतिया डाह से भरी हुई चाँदनी कहे तू निकल! निकल! दोनों-दोनों को कुपित दृष्टि से घूर उठें हो विकल-विकल पसरे सन्नाटे बोल उठें लज्जा मर्यादा छोड़-छाड़ कामातुर लगने लगें जीव ऋतुपति के रंगमहल से जब टक्कर लेने की होड़ करे सूखड़ी झोपड़ी खड़ी-पड़ी डायन की सुन्दरता रति को दे उठे चुनौती बार-बार मदगन्ध सुहानी डोल उठे बहकी बयार रस घोल उठे हो उठे मधुरतम हर आलम नर बोल उठे सजनी रजनी! रजनी बोले बालम! बालम! हौले हौले शरमाती हो जब प्रीति परस्पर गाती हो उद्दाम काम उन्मत्त प्रेम दुर्दम्य ललक वासना भरी चहुं ओर दिखाई देती हो मस्ती सी छाई लगती हो बस्ती बौराई लगती हो जब ग़ज़ल रुबाई लगती हो समझो द्वारे पर है बसन्त।।

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली110092

महाशृंगार छन्द में

तुम्हारा अद्भुत है संसार

कहीं पर कितने पहरेदार, कहीं पर एक न चौकीदार।
कहीं पर वीरों की हुंकार, कहीं पर कायर है सरदार।।

कहीं पर बूँद न पड़ी फुहार, कहीं पर धार मूसलाधार।
कहीं पर बरसे खुशी अपार, कहीं पर दुख के जलद हजार।।

कहीं पर अँधियारे की मार, कहीं पर उजियारा आगार।
कहीं पर गरमी है गरियार, कहीं पर सर्दी का संहार।।

बदलते मौसम बारम्बार, देख कर लीला अपरम्पार।
कह उठा मन यह आखिरकार, तुम्हारा अद्भुत है संसार।।1।।

किसी का वेतन साठ हजार, किसी को मिलती नहीं पगार।
किसी के भरे हुए भण्डार, किसी का उदर बिना आहार।।

किसी को सौंपी शक्ति अपार, किसी का अंग - अंग बीमार।
किसी का चोला तक लाचार, किसी का जीवन ही धिक्कार।।

किसी की नाव बिना पतवार, किसी के हाथ बने हथियार।
किसी का सत्य बना आधार, किसी का झूठ पा रहा सार।।

किसी को दिए दाँत दमदार, किसी की चोंच हुई चमकार।
किसी को पाँव नहीं दो चार, किसी को पाँवों की भरमार।।

किसी को मिले नहीं अधिकार, किसी की होती जय जयकार।
स्वयं तुम निराकार साकार ! तुम्हारा अद्भुत है संसार।।2।।

हुआ विज्ञान चाँद के पार, तिरंगा लहराया इस बार।
देश का स्वप्न हुआ साकार, जमाया भारत ने अधिकार।।

जगद्गुरु भारत का परिवार, वेद विद्या का पारावार।।
ज्ञान को कर - कर फिर साकार, दिखाता दुनिया को हरबार।।

तोड़ अब नफरत की दीवार, बढ़ेगा पथ पर पानीदार।
भुला कर स्वार्थ और अपकार, करेगा जीवों का उपकार।।

देखकर प्रकृति और उपहार, करेगा निर्विरोध स्वीकार।
खड़ा है अडिग बीच बाजार, करेगा सुख - दुख अंगीकार।।

बढ़ाकर प्रेम और सत्कार, मान कर ईश्वर का आभार।
कहेगा तुम हो जगदाधार, तुम्हारा अद्भुत है संसार।।3।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

खुशी का पैमाना

अंजना छलोत्रे 'सवि'

इस गर्मियों में ससुराल गई तो सभी से सुन की नया घर बनाया हैं बुआजी ने। गर्मी की छुट्टियों में जब भी हम लोग परिवार सहित शहर से पहुँचते तो छोटी बड़ी बुआ जी, नंनदें आ जाया करती, दो-चार दिन सब साथ रहते।

तभी बुआ ने भी कहाँ था.. "आ जाना कभी हमारे घर भी बहु।" उसने भी आने का वादा कर दिया था,और वह दूसरी गर्मी की छुट्टियों में पहुँच गई।

घास फूस और कांस से बना वह घर जिसे देखने वह दूर शहर से आई है। पिछड़े वर्ग को दिया गया वह जमीन का टुकड़ा, जमीन मालिक ने बुआ जी को बेच दिया हैं, उसी लाइन में छोटे-बड़े सभी रह रहे है, दलहान के बाद एक लंबा कमरा जो रसोई, शयनकक्ष भी हैं, जिसमें साल भर का अनाज की कोठियाँ भी रखी हैं, एक बास दो रस्सियों से लटक रहा हैं जिस पर कपड़े टांगे हैं, उस छोटे से कमरे में व्यवस्थित सामान जमा है, छत खपरैल की बनी हैं, कमरे में प्लेटफार्म की तरह जगह छोड़कर, मिट्टी से चबूतरा बना उसे गोबर से लिप दिया गया है, छोटा मोटा सामान आराम से उस पर रखा जा सकता है। छत की सीढ़ियाँ बास की बना रखी है जिससे बरसात में खपरैल पलटने के लिए भी काम लिया जा सके, आगे तुअर की खाड़ी से छपरी बना रखी हैं, गर्मी में खाना वही बाहर ही पकाया जाता है।

सामने ही बिजली का खम्बा हैं जिससे रोशनी दलहान तक आती है, गर्मियों में बिजली कम ही जलाई जाती, एक मिट्टीतेल का डिबरी ही रोशनी का काम कर देती।

साँझ होते ही बाहर बिस्तर आँगन में लगा दिए जाते ओर बस्ती से बाहर एक लाइन से बने यह कच्चे पक्के मकान अनुशासन का जीवंत उदाहरण बन निद्रा की आगोश में खो जाता।

उस पूरी लाइन में मुख्य द्वार से ही गंदे पानी की निकासी बनी हुई है, उन्हीं गड्ढों में से प्लास्टिक पाइप द्वारा नल बाहर निकाल पानी भरा जाता है, बच्चे बाल्टी, लोटा, भगोना जो भी छोटा बर्तन होता भरने दौड़ जाते, उस चिल्ल-पों में ही शायद पक्षी जाग जाते हैं। वहाँ पानी की किल्लत का नजारा देख मन कसैला हो गया। बुआ बेचारी बड़ी शर्मिंदगी महसूस कर रही है।

" यह स्थिति तो शहरों में भी छोटी बस्तियों में होती है बुआ जी।"...उन्हें इस स्थिति से उबारने के लिए जया बोली।

"क्या पता बहू, एक तो अच्छा खासा पाँच चश्मे का मकान और बाड़ा छोड़ इस जगह आ बसे... तुम्हारे फूफाजी, इस नर्क में मेरा तो दम घुटता है, कैसे अपने परिवार वालों को यहाँ बुलाऊँगी, बड़े भैया, यानी जया के ससुर तो अभी तक आये ही नहीं, उन्हें तो गाँव छोड़कर यहाँ बसना पसंद ही नहीं था।"... बुआ उदास हो गई।

"कोई बात नहीं बुआ, अब यहाँ अच्छा मकान बना लेना, तब तो अच्छा लगेगा।"...उसने सांत्वना सी दी।

" कहाँ बहू, मलेच्छों के बीच सोने का भी मकान बनवाओ तो क्या

खाक अच्छा लगेगा, फिर बनाये भी कौन, एक जेठ जीवन भर कुंवारा रहा, फूफा जी तुम्हारे बूढ़े हो चुके हैं, दोनों बेटे शहर नौकरी करने बहू बच्चों के साथ जा बसा, हम यहाँ मकान बना कर क्या करेंगे बहू।"... बुआजी का स्वर अवसाद से भर गया।

जया उनके चेहरे पर उभर आई झुरियों के बीच दु:ख की रेखाएँ साफ देख रही है, उन्हें छोटे बेटे के पास रखने की बड़ी लालसा थी, किंतु वह भी अपने बड़े भाई के साथ शहर चला गया।

छोटे बेटे से मैंने कहा कि तुम हमारे पास ही रह जाऊं तो उसने जवाब दिया तो बहुत बुरा लगा बहू।

"यहाँ अपना जीवन बर्बाद नहीं करूँगा बाई।"..छोटा बेटा निहाल बोला था।

" बेटा, हम भी तो रहते हैं, क्या दुख है यहाँ?"..."जानती हो क्या बोला था वह... तुमने तो अपना जीवन बर्बाद किया, मेरा भी करोगी, मैं अपना जीवन यहाँ नहीं बिता सकता।".. बुआ के स्वर मैं उदासी झलक आई।

"ठीक है बुआ जी, उन्हें अपने परिवार की चिंता है उन्हें आगे बढ़ने दो आप दिल छोटा मत करो।"...जया धीरज बंधाते हुए बोली।

"क्यों बहू, क्या हमने इनका जीवन बर्बाद किया है? पाला-पोसा, खिलाया, पिलाया क्या यही सब सुनने के लिए।"... बुआ रुआँसी हो गई।

"अरे नहीं बुआ जी, अभी निहाल में अकल नहीं है, तभी ऐसा कह गया, थोड़ा समझदार होने दो, उसे अपनी गलती का अहसास अवश्य होगा।"...जया समझाने की गरज से बोली। दर्द बच्चों के बिछड़ने का था, बुआ आँसू बहाती रही।

" बहू, तुम ही कभी कभार आ जाया करो, कितना अच्छा लग रहा है, बच्चों को भी ले आती तो हम भी उन्हें देख लेते।"...उनका मातृत्व उभर आया था।

प्रेम कितना निश्छल होता है, कष्टों के बीच भी प्यार का प्याला कभी रीता नहीं। फूफाजी इतने सीधे की प्रत्येक बात बुआ को ही समझानी होती है।

" यह तो.. आज भी बच्चे ही हैं।".. आँसू पूछते हुए बुआ बोली।

"भैया की बड़ी बहू आई है, डगरा ही खरीद लाओ, बैलगाड़ियाँ खड़ी होंगी अभी तो।"...फिर थोड़ा चिढ़कर बुआ फूफाजी से बोली।

जया नहीं... नहीं... ही करती रह गई। बुआ ने फूफाजी को एक थैले में गेहूँ भर कर भिजवा दिया।

"यहाँ गंजाल से बैलगाड़ी में भरकर ड़गरे, तरबूज, ककड़ी बिकने रोज आते हैं, ले आने दे, दो या तीन पाई गेहूँ में, अच्छे बड़े तरबूज, खरबूज मिल जाते हैं, पैसे नगद थोड़े ही देने होते हैं।"... बुआ ने सहजता से यह बात उसे समझाई।

खेती-बाड़ी होने के कारण गाँव में अक्सर सामान गेहूँ से खरीदा जाता है। बेचने वाले भी अपने साथ नापने की पाई और थैला रखते हैं।

फूफाजी एक बड़ा सा तरबूज कन्धे पर रख दोनों हाथों से पकड़कर चले आ रहे हैं। उनकी चाल में ऐसी मस्ती है मानो वह आज भी जवान है। ऐसा लगा जैसे बहुत दिनों बाद आज तरबूज की जगह खुश होने का सामान उठा लाये हो, नजदीक आने पर उनकी धीमे-धीमे गुनगुनाने की आवाज बुआ को भी शर्माने को मजबूर कर गई।

जया ने थोड़ी छुपी अँखियों से बुआ को देखा, जहाँ सारे विशाद धराशाही हो गये हैं।

बुआ के चेहरे पर लाज की परत थी और चेहरा लाल हो गया है फूफा जी की इस अदा पर वह आज भी उतनी ही शर्मा रही है जितना कभी जवानी में शर्मा जाती होंगी, जया सोचने पर विवश है कि कहाँ है यहाँ पर बच्चों से बिछड़ जाने का गम एक पल में खुशियाँ खिलखिलाती दरवाजा पर आ लगी है, यह तो हमारा दिमाग है जो हमें हर जगह दौड़ लाता है दो इंसान अगर एक दूसरे के प्रति समर्पित हैं तो खुशी तो वहाँ हमेशा मौजूद ही रहेगी।

000

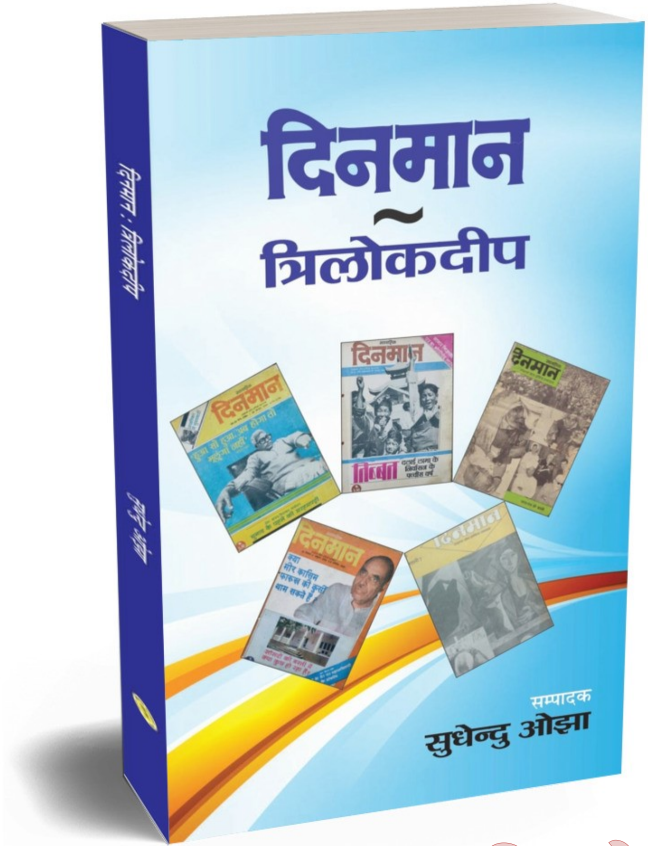

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप
Author सुधेन्दु ओझा
ISBN : 978-81-963524-6-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 168
Price : 300/-
Genre: गद्य : पत्रकारिता

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

साधना

गरीबी से तंग आकर महेसर जादो ने खुदकुशी करने की सोची, पर मरने की हिम्मत नहीं जुटा पाया। दो वक्त की रोटी जुटा पाना किसी पर्वत के शिखर पर चढने जैसा अंसभव काम लगने लगा था। दूसरों के खेत-खलिहान में कभी कभार काम मिल गया तो अन्न के दर्शन हो गये वरना चूल्हा उदास। सरकार की तमाम योजनाएँ मिलकर भी भ्रष्टाचार के कारण उसके परिवार का पेट भर पाने में सक्षम नहीं हो पा रही थीं।

तब महेसर ने पालयन करने की सोची।

" बीवी-बच्चे सब अपना-अपना नसीब लेकर आये हैं। जीना होगा तो जी लेंगे वरना दम तोड़ देंगे। मैं अब चलता हूँ " - महेसर ने सांसारिकता का त्याग कर दिया।

कई महीनों के बाद महेसर किसी गाँव वाले को गंगा किनारे श्मशानघाट पर मिला। वह औघड़ हो चुका था।

गाँव वाले को उसने बताया - भाई जब से संन्यास लिया है, बहुत आराम है। उस पार से इधर दूध बेचने जो ग्वाले आते हैं, चढ़ावे में दूध दे जाते हैं। खा पीकर रोज का पाँच-सात लीटर आराम से बच जाता है जिसे मिठाईवाले को बेच देता हूँ। इस घाट पर पन्द्रह-बीस लाश रोज आती है। सब पैसा, कपड़ा दे जाते हैं। ऊपर से बहुत बार तो मरे हुए आदमी के शरीर से गहना वहना भी मिल जाता है। मेहरारू सब की लाश नयी साड़ी में आती है। वो ऊपर से मुनाफा है और अधिकांश बार साड़ी के छोर में रूपया - पैसा गँठिया के। भगवान की दया से अब सब ठीक है। महीने में एक बार एक चेला को गाँव भेज देता हूँ, वो महीने भर का खर्चा हमरी मेहरारू दे आता है। अब वो सब भी चैन से जी रहे हैं।

गाँव वाला हैरान था महेसर जादो की योग्यता पर। किस काबिलियत से उसने सन्यास और गृहस्थी दोनों को एक साथ साध रखा था। वाह महेसर गजब की है तुम्हारी साधना। औघड़ बाबा की जय।

दीपक कुमार

स्नेह सिक्त

"शायद ही कोई ऐसी बात हो जो मैंने तुम्हारी न मानी हो!"

"मैंने भी आप से कभी कोई नाजायज़ माँग नहीं की।"

"मुद्दा तो इस वक्त यही है। तुम्हारी यह माँग अनुचित है।"

"अनुचित माँग नहीं, आपकी सोच है।आपको डर लगता है हर वक्त आगे बढ़ने से।"

"मैं डरता हूँ आगे बढ़ने से? शर्म नहीं आई तुमको ऐसा कहते हुए? अपने सारे रिश्तों को ताख पर रखकर तुम्हें यहाँ शहर लेकर आया।"

"हाँ, तो आप भी इस दुनिया को जान पाये, इंसानों वाला जीवन जीने का सुख आपको भी मिला।थोड़ा और बदलिये दुनिया को जानिये।"

"मुझे मेरा गाँव और पारिवारिक धरोहर बेहद प्रिय थी। तुम्हारी जीवन की ज्योत किरण जगमगाये इस लिए गाँव छोड़ शहर आ बसा किंतु मैं मेरा देश और धर्म दोनों ही नहीं छोड़ सकता।तुम्हारी यह ज़िद्द मैं कभी भी नहीं मानूँगा।"

"फिर मुझे आप से विदा लेनी पड़ेगी पापा! क्योंकि मैं रेफल के साथ लंदन जा रही हूँ।लेविस लाइफ़ जीने के लिये।इतनी मेहनत से अर्जित की हुई अपनी शिक्षा को यहाँ बर्बाद नहीं कर सकती।"

"जो शिक्षा अपने देश के काम न आये ऐसी शिक्षा को मैं किसी काम का नहीं समझता। मैं शर्मिंदा हूँ अपनी परवरिश पर।"

स्नेह सिक्त परवरिश से नई सोच ने मुख मोड़ लिया।

ज्योत्सना सिंह

सौभाग्य प्रकाशन साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :

1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharati@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सेप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अत: उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

ब्लैक होल

- विजयानन्द विजय

दिनानुदिन तेज होते जा रहे शहरीकरण से पेड़ और जंगल कटते गये। पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के कारण वन्य प्राणियों का अस्तित्व संकट में पड़ गया।जंगल में शेरों की संख्या कम होने लगी। राजा शेर सिंह का अब कोई वारिस नहीं बचा था, जो उनके बाद जंगल पर शासन कर सके।बाघों के साथ भी वही स्थिति थी।वृद्ध राजा को अब चिंता होने लगी कि उनके बाद इस जंगल का क्या होगा।काफी सोच - विचार कर उन्होंने अपने मंत्रियों और सभासदों की एक बैठक बुलाई।राजा ने जानना चाहा कि जंगल में रहने वाले जीवों में से किसे राजा बनाया जाए। लोमड़ी अपनी धूर्त्तता के लिए बदनाम थी, तो भेड़िये अपनी दुष्टता के लिए।हाथी खुद ही सुस्त जीव था, और बंदर उछल-कूद स्वभाव वाला अस्थिर जीव।भालू का तो सवाल ही नहीं था। बचे पक्षी, तो वे हवा में ही रहते थे, वे जमीन का हाल क्या जानते ? इसलिए निर्णय लिया गया कि किसी मजबूत कद - काठी वाले शक्तिशाली, मेहनती और परिश्रमी जीव की तलाश की जाए और उसे राजगद्दी सौंप दी जाए।सभी ने इस पर सहमति जताई।

ऐसे योग्य जानवर की तलाश शुरू हो गई, मगर ऐसा कोई भेजी जंगल में नहीं मिला, जिसमें वे सभी गुण विद्यमान हों।एक दिन सभा में डरते - डरते एक सभासद ने प्रस्ताव दिया - हुजूर क्यों न गधे को यह दायित्व सौंपा जाए ?

- हाँ।ठीक तो है।वह मेहनती है, शक्तिशाली है, परिश्रमी है, धीर - गंभीर जीव है। - कहते हुए राजा शेर सिंह ने कुछ देर सोचा, फिर कहा - मगर जंगल में गधे हैं कहाँ ? सब तो नगरों में काम करने चले गये हैं।

- जी महाराज। तो, अब हम क्या करें ? - सभासदों ने एक स्वर में पूछा।

- नगर में जाकर सबसे समझदार गधे को समझा - बुझाकर जंगल में लाया जाय। - राजा ने त्वरित आदेश जारी किया।

सभासदों का एक दल नगर में गया । नगर के सबसे हृष्ट-पुष्ट, परिश्रमी और समझदार गधे को समझा-बुझाकर जंगल में लाया गया। शेर सिंह ने उसे देखा, तो उससे बहुत प्रभावित हुए और एक भव्य समारोह में उस गधे को जंगल का राजा बना दिया गया।

जीवन भर सामान ढोने, मजदूरी करने और मूर्ख समझे जाने वाले गधे ने कभी सोचा भी नहीं था कि वह कभी राजा भी बनेगा।मंत्रीगण और सभासद गधे राजा के नाम पर शासन - प्रशासन चलाने लगे। वे जो-जो प्रस्ताव गधे राजा के पास लाते, राजा उस पर अपनी स्वीकृति प्रदान कर देते और ढेंचू - ढेंचू कर खुश होते।उनकी कम बोलने वाली और धीर - गंभीर छवि से प्रजा भी बहुत खुश थी। उनका सम्मान करती थी।

जब कभी गधे राजा अपने रथ में बाहर निकलते, तो प्रजा उन्हें देखने के लिए सड़कों पर उमड़ पड़ती। उन पर फूल बरसाती, उनकी जय - जयकार होती।यह सब देख गधे राजा गद्गद हो जाते।

गधे राजा जब खुश होते, तो ढेंचू - ढेंचू करते, दु:खी होते, तो ढेंचू - ढेंचू करते।मंत्रीगण कोई प्रस्ताव देते, तो ढेंचू ढेंचू करते।सहमति व्यक्त करते, तब ढेंचू - ढेंचू करते।जब असहमति होती, तब भी ढेंचू - ढेंचू करते।ढेंचू एक तरह से राजकीय आवाज और पहचान बन गया।

जंगल की प्रजा भी गधे राजा की इस शैली से इतनी प्रभावित हुई कि उन्होंने भी हर बात पर ढेंचू - ढेंचू करना सीख लिया।ढेंचू - ढेंचू के उच्चारण से प्रजा को अद्भुत खुशी मिलती और उनके शरीर में उत्साह का संचार हो जाता।

धीरे-धीरे जंगल के सभी प्राणी अपनी बोली, अपनी भाषा, अपनी ज़ुबान भूल गये और ढेंचू - ढेंचू करने लगे।जंगल में बस तब से ढेंचू-ढेंचू का स्वर ही गूँज रहा है।

समय की महिमा

तुषार शर्मा "नादान"

अजब समय की चाल है देखो,
हाथों से फिसलती जैसे रेत है।
साथ हो गर तो जीवन सुखमय,
रूठे तो लगे कि बंजर खेत है।।

पलक झपकते हाल बदल दे,
ईश्वर भी होते नतमस्तक।
इसकी गाथा से अटी पड़ी है,
पुराण ग्रंथ इतिहास की पुस्तक।।

किसने सोची होगी यह बात,
बनकर बैरी आई थी रात।
बनते राजा जो अगले दिन में,
भटके चौदह बरस वो वन में।।

चौसर लेकर समय था आया,
बचा न कुछ भी राज पाठ।
भाई बने आपस में दुश्मन,
मचा युद्ध और रक्तपात।।

आर्यावर्त के थे महाराणा,
जिनका प्रताप राष्ट्र ने माना।
काटते जो शत्रु की बोटी,
खानी पड़ी घास की रोटी।।

ऐसा नहीं कि सिर्फ बुरा है,
ये समय अपने में खरा है।
खुशियां भी इससे मिली है,
बहुतों की तकदीर खिली है।

घनानंद का पाप बढ़ा तो,
समय ने गुरु चाणक्य चुना।
जंगल का इक आम युवा तब,
चंद्रगुप्त सम्राट बना।।

बढ़ा प्रकोप था मुगलों का जब,
समय की सीख दी जीजा मां ने।
लाए स्वराज तब वीर शिवाजी,
गौरव सारा भारत माने।।

समय बदलते देर ना लगती,
कारण है ये तथ्य विशेष का।
चाय बेचता एक युवा जब,
महामात्य होता है देश का ।।

गया समय ना वापस आता,
आते हुए का नहीं है भान।।
अभी जो पल है पास आपके,
जियो उसी में बन "नादान"।।

अ- से अच्छा सोचो न!

दुख तो मुझे भी है
और गुस्सा भी!
खून खौल रहा है
साँसें जल रही हैं
पर मैं तुम्हारी तरह
नहीं लिख सकता-
ब- से बम
ग - से गोली
प- से प्रतिशोध।
मैं प-से प्रेम लिखूँगा
व- से वार्त्ता
और स- से समझौता।
ग- से गीत
और म- से मीत।
मैं जो भी लिखूँगा
वह पर्यायवाची नहीं होगा
किसी के कहे का।
तुम्हीं सोचो न एक वर्ण से
कितने सुंदर शब्द बन सकते हैं
जैसे य से युद्ध नहीं, याद
फ से फरेब नहीं, फूल
द से दम्भ नहीं, दिल।
तुम भी कुछ इसी तरह सोचो न
सोचने से अगर बदल सकती है दुनिया
तो अ- से अच्छा सोचो न!

संजय कुमार सिंह

न्यूज़

(कहानी)

संजय कुमार सिंह

बलराज कम्प्यूटर के सामने बैठ कर अपना साप्ताहिक पेज तैयार कर रहा था। यह 'रूट 'अखबार का एक विंग था, जो आधुनिक यांत्रिक सुविधाओं से लैस था। बाँकी लड़के भी उसकी तरह अपने-अपने काम में मशगूल थे। सात दिन में एक दिन प्रति शुक्रवार को खोज-खबर नाम का यह कालम आता था, जो काफी लोकप्रिय था। लाखों पाठक थे इस पेज के। इस कालम में बिल्कुल मौलिक और सामयिक खबरें रहती थीं, कुछ ऐसी ही खबरों के पीछे बलराज की उंगलियाँ दौड़ रही थीं... तभी सी.सी. कैमरे पर एक स्त्री को रूम में प्रवेश करते देख वह चौंक गया, यह कहीं रूमि तो नहीं? वह अपनी कुर्सी पर और सीधा तन कर बैठ गया, अगर रूमि ही हो, तो उसकी कोशिश थी कि वह उसे देख नहीं पाए, पर आँखों की चपलता उसके दिमाग को भटका कर सी.सी .कैमरे के स्क्रीन पर ले जा रही थी, वह कनखियों से उसे देखने की कोशिश कर रहा था...

स्त्री ने पूछा," खोज-खबर के संपादक कौन हैं?"

बास की ऐनक उछली, हाथ कम्प्यूटर स्क्रीन से हटा, " मैं के.सी . परमार... क्या काम है आपको? जल्दी बताइए... काफी इन्गेज हूँ मैं...."

" बैठूँ?" स्त्री ने पल्लू संभाल कर कहा।

" बैठिए..." बास ने अनमना कर कहा।

स्त्री ने बैठ कर उसाँस ली," मैं रूमि मल्होत्रा अपने पति से प्रताड़ित हूँ। वह मेरे साथ रोज मार-पीट करता है। वह पुलिस में सब इन्सपैक्टर है। ऊँचे रसूख वाला आदमी है, लेकिन मैं उसके अत्याचार से से तंग हूँ, मैं चाहती हूँ कि ' खोज-खबर में मेरी व्यथा-कथा को आप जगह दें, ताकि मुझे न्याय मिले... मैं बहुत उम्मीद से आयी हूँ... मेरी छोटी-छोटी पाँच और सात साल की दो बेटियाँ हैं.... वह चरित्र से भी गया-गुजरा ऐय्याश है..परले दर्जे का शराबी भी..." फिर उसने सिर से पल्लू हटाकर कहा," देखिए मेरे सिर की हालत ... बाल खींचने से खून जम गया है..."

बलराज को लगा जैसे दिल के फोड़े में नश्तर लगा हो, वह दर्द से तड़प कर रह गया। रूमि हाँ रूमि उसके कालेज की जहीन लड़की एक आम भारतीय स्त्री की तरह घरेलू हिंसा और उत्पीड़न के आगे इतनी लाचार हो सकती है, तो देश की और स्त्रियाँ इन्हीं परिस्थितियों में खुद को कितना विवश महसूस करती होंगी...?

बास ने निस्संग भाव से कहा," ठीक है, ठीक है... आप अपना बयान और उत्पीड़न से संबंधित रिपोर्ट डेस्क पर रख दीजिए,अगर सही

लगा, तो हम छापेंगे... यह थाना नहीं है, अखबार का दफ्तर है... हम पहले उस पक्ष को भी सुन लें... पति के बारे में आप जो कह रहीं हैं, वह कितना सच है...अभी आप जाइए... हम देखते हैं..." बास कम्प्यूटर के स्क्रीन की ओर मुड़ गए।

कुछ पल असमंजस में बास की ओर आशा भरी नजरों से ताकने के बाद वह उठ गयी। बलराज को लगा कि किसी ने जैसे उसके घाव की पट्टी बाँध दी हो... उसकी उंगलियाँ की बोर्ड पर खड़ने लगीं। दिमाग में एक स्त्री का धुंध था ...आँसू और अँधेरे के गुबार में लिपटा हुआ... उसने न्यूज के साथ पेज पर वैसा ही कुछ पेस्ट कर दिया और बास के पास न्यूज बाॅक्स में भेज दिया।

बास बमका," बलराज तुम्हारे अंदर सेंस आफ ह्यूमर है कि नहीं? इस स्टोरी में आसमान के बीच उड़ती हुई चिड़िया का इमेज पेस्ट करो और शीर्षक लगाओ आसमान मुट्ठी में...तुमने इस औरत की बात कहाँ से घुसा दी..."

" साॅरी सर!" उसने बास के कहे का अनुकरण किया। बास की अनुपस्थिति में खोज-खबर के पाँचों नवोदित पत्रकार उन्हें गेंडा कहते थे और आपस में खुद को तेंदुआ, लक्कड़ बग्घा कह कर मजाक उड़ाते थे।यह डिप्रैशन को हल्का करने का एक तरीका था। बास को सब पता था। बलराज को हड़काने के बाद उन्होंने राहुल को किसी गलती पर हड़काया, फिर आदित्य और इरफान पर हेकड़ी झाड़ी," लड़को अपने काम पर सजग रहा करो, खोज-खबर का अपना इमेज है। मैनेजमेंट कुछ लड़कों को निकालने पर सोच रहा है...बी सिंसियर..."

यह यह सब उनका तकिया कलाम था। मुर्गा हलाल हो न हो, उस मैनेज् मेंट के चाकू से भय दिखाओ! किसी ने मुर्गे का इमोजी आपस में भेजा। वे कुछ देर इस खेल में लगे रहे... बास उनकी हरकतों से अलग खुद की अहमियत में ऐंठ कर कुछ करने के एक्शन में लगे रहे।खोज-खबर का सारा काम लड़कों के कंधे पर होता था। बास तो बस मूसरचंद थे।

पप्पू चाय दे गया, तो कुछ देर के लिए सब चाय पीने लगे।

बलराज को पता नहीं क्यों मिचली आ रही थी, वह उठा और बास के पास गया ," सर आज मैं निकलूँ? कुछ अर्जेंट है, हास्पिटल जाना है..."

"तुम रोज यही कहते हो।" बास बिगड़े," काम से भागने की यह तरकीब भूलो, अभी इस लाइन में अपना करियर बनाओ...समाज सेवा छोड़ो.."

लड़के मास कम्यूनिकेशन की डिग्री लेकर आए थे, जबकि बास पहले टेन्ट हाउस चलाने का काम करते थे, बिजनेस का बोरिया-बस्ता डुबोकर मैनजमेंट में मामा-भांजा करते-करते मीडिया में आए थे, पर अपने को बाबू राव विष्णु पराड़कर से कम नहीं मानते थे... बलराज अभी भी उनके हाँ और ना के बीच अटका था। लड़के आक्रोश से बास के शेखचिल्लीपन पर खीझ रहे थे। शायद वे समझ गए, सो बदल कर बोले, "जाओ और यह रूमि मल्होत्रा की फाइल भी उठाते जाओ ... कल इस पर एक स्टोरी बनाकर लाओ... हाँ उसके हस्बैंड से मिल कर उसका भी पक्ष लो... ऐसी औरतें नाटक भी करती हैं...मुझे तो सिनिकल लगी... "

" सर! यह काम मुझसे नहीं होगा।" उसने सिहर कर कहा।

" क्यों?"बास का पारा गरम हुआ," यह क्या बात हुई?"

" मुझे लगता है... मैं उस्त्री को जानता हूँ..." उसने हिचककर कहा ," राहुल को भेज दीजिए..."

" तुम लोगों में यही दिक्कत है, न्यूज न्यूज होता है, वह तुम्हारा सब्जेक्ट नहीं, आबजेक्ट है ... एक प्रोफेशनल इंस्टिंक्ट पैदा करो अपने अंदर...नहीं, तो पीछे छूट जाओगे... उसने जो कहा तुमने सुना नहीं? हमारे लिए न्यूज है वह... मौसी, दीदी और प्रेमिका मानकर चलोगे, तो इस प्रोफेशन में नहीं टिक पाओगे... तुम जाओ...कवर करो... डाॅक्टर की तरह अपना काम करो, मरने-जीने से बेफिक्र...."

" प्लीज सर... यह मुझसे नहीं होगा..."

"कौन है वह तुम्हारा? जरा मैं भी जानूँ... क्या पता राहुल भी कोई रिश्ता निकाल बैठे..." उन्होंने तंज से कहा," कहा न, यह एप्रोच अखबार के पेशे के कोड-विल के खिलाफ है...."

"इरफान चला जाएगा..." किसी ने कहा।

"जाने के लिए कोई जाए, पर अब मैं जाऊँगा ..." बास उठे और निकल गए। सारे लड़के अवाक रह गए। बहस में समय निकल गया था। एक तरह से ड्यूटी का आवर समाप्त हो रहा था।

...

माहौल में कई दिनों तक कशीदगी बनी रही।बास और आफिस के बीच अबोला जैसा था। बास नाराज थे। रूमि का मामला ठंढे बस्ते में चला गया था, पर बलराज कहीं न कहीं परेशान था। बार-बार रूमि की स्मृति उसके जहन में उपस्थित हो जाती थी। कालेज के दिनों में बेहद बिंदास रूमि की अपनी एक छवि थी। एन्वल प्रोग्राम में वह गायन और नृत्य में अव्वल आती थी। कई बार एंकरिंग और अभिनय में भी उसने अपना जलवा बिखेरा था। वह अँग्रेजी विभाग की शान थी। कई नौजवान उस पर फिदा थे। बलराज से उसकी निकटता थी।उसको कभी -कभी लगता था उन दोनों के बीच कुछ है। कुछ खतो-किताबत के खेल भी चलते थे ...लाइब्रेरी में कई बार वे एक -दूसरे के मन को टटोलने का प्रयास करते थे,एक बार उसने किसी बात पर कहा था," स्त्री का अपना कोई आकार नहीं होता ...वह पानी की तरह होती है, जिस बरतन में डालो, जिस रंग में घोलो वह वैसा हो जाती है..."

सहसा उसके मुँह से विस्मय में निकला था," तुम अपने लिए भी कहती

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मोड़ पर ज़िंदगी

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-3-1

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 118

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

हो... तुम्हारे बोल्ड इमेज से यह मेल खाता है?"

" तो क्या मैं स्त्री नहीं हूँ?" एक आह सी निकली थी उसके मुँह से," औरत कितना भी बोल्ड हो, उसका अपना विचार नहीं होता.."

" अप्रैल फूल मना रही हो क्या?" वह बिगड़ा था। वह हँस पड़ी थी, पर वह उसकी अपनी हँसी थी क्या? कुछ दिनों के बाद अचानक वह हुआ, जिसकी उसे उम्मीद नहीं थी। रूमि का विवाह एक पुलिस आफीसर से हो गया और वह उस शहर को छोड़ कर दिल्ली आ गयी... बलराज शुरुआती हिचकोलों के बाद मास कम्युनिकेशन का कोर्स कर अखबार में लग गया... रूमि उसकी यादों से निकलती गयी... आभासी दुनिया में भी रूमि फिर कहीं नहीं मिली... अचानक उसका इस तरह दफ्तर आना उसके लिए अप्रत्याशित था... अब जब उसके जाने के बाद कई एडीशन में बास ने उस खबर को जगह नहीं दी, तो उसे पछतावा हो रहा था कि उसने बास की बात क्यों नहीं मानी... कई बार रूमि के मामले को लेकर उसकी इच्छा हुई कि वह बास से बात करे, पर इसके लिए अलग से उसको चौपाया बन कर दुम हिलाना पड़ता... राहुल से भी कई बार उसने बात की... दूसरे-तीसरो लड़के भी खुद को कोस रहे थे... एक उम्मीद खोज-खबर के न्यूज डेस्क में दब कर दम तोड़ रही थी।

एक दिन इरफान ने उनसे पूछा, तो वे मुस्कुरा कर रह गए। बलराज ने मान लिया कि आधी पृथ्वी का दुख किसी भी अखबार और संचार के किसी भी मोड में कभी नहीं आता। इतनी अदालतें , कानूनगो और स्वयंसेवी संगठनों के रहते भी हर किसी को न्याय नहीं मिलता... रूमि भी कोई अपवाद नहीं । वह लगभग इधर से उदास हो गया था। उसे अपने पेशे से भी अरूचि हो रही थी, तभी एक दिन रूमि की कवर स्टोरी 'खोज खबर ' में लग गयी। बलराज शीर्षक पढ़ कर हैरान रह गया- एक ड्रामे बाज औरत की दास्तान। गजब का उल्टा फीचर बनाया था बास ने।उसमें लिखा गया था कि सिर्फ घरेलू हिंसा से पत्नी नहीं पीड़ित है बल्कि कहीं-कहीं पति भी परेशान है। आगे रूमि के बारे में लिखा गया था कि वह किसी रघुराज नाम के लड़के से प्रेम करती है... उसके मोबाइल में कई ऐसे लोगों के नम्बर हैं, जिनसे उनके पुलिस इंसपैक्टर पति तंग रहते हैं... वह माथे पर रंग डाल कर कहीं पहुँच जाती है कि उसे पति ने मारा है...कभी-कभी ब्लेड से खुद उंगली खरोंच लेती है.....और पुलिस स्टेशन पहुँच जाती है...अखबार के दफ्तर पहुँच कर नाटक करती है..."

"ऐसा क्यों करेगी कोई औरत?क्या यह ह्यूमन बिंग का करैक्टर है? उसके पति में दोष क्यों नहीं हो सकता?भारत में हर वर्ग की स्त्रियाँ नीचे से ऊपर तक घरेलू हिंसा की शिकार है...अभी एक पाँच सितारा होटल में एक एलीट क्लास की औरत मृत्त पायी गयी... वह पति के साथ आयी थी... पर पति बेदाग बच गया...औरत को डिप्रैस्ड किया जाता है हर कहीं... यह क्या छपा है खोज-खबर में..." बलराज उबल रहा था।

बलराज क्या सारे चश्मदीद लड़कों के तन-मन में आग लग गयी थी। सब मानसिक स्तर पर बास से आर-पार की लडाई लड़ना चाहते थे।जाहिर था उसके पति से एक मोटी रकम लेकर बास ने अखबार की प्रतिष्ठा के खिलाफ गलत बात छापी थी...बलराज उनके पीछे अपने को तैयार कर चुका था। रूमि के बारे में वह सबको बता चुका था। बास आए, तो उसने तमक कर पूछा," यह क्या छपा है अखबार में सर...?"

"न्यूज..." बास ने सख्त जबान में कहा।

"तो वह ड्रामेबाज औरत है?" उसने सीधा सवाल किया।

"हाँ वह ऐसी है..." बास ने कहा," मैंने खुद आब्जर्ब किया...उसके घर गया... पति से उसकी दास्तान सुनी... आस-पड़ोस के लोगों से पूछा... सबने पति की बातों की तस्दीक की..."

"सर! उस औरत का पति एक पुलिस अफसर है.."उसने बास की बातों का प्रतिरोध करते हुए कहा," उसके डर से कोई कैसे सच बोलेगा...? "

" किस बात का डर?"

" पुलिस क्या कर सकती है, आप नहीं जानते..." बलराज ने अपने पक्ष को तफसील दी," लाखों लोग निर्दोष पुलिस की साजिश से जेल में सड़ रहे हैं.. फर्जी एनकाउण्टर तक कर देती है पुलिस..."

"चलो, हो गया । अपने काम में लगो।"बास ने झटक कर कहा," बकवास मत करो।"

" सर !कालेज के जमाने से मैं उसे जानता हूँ। वह हमारे का◌ॅलेज की सबसे नामचीन लड़की थी। डांस, डिबेट... एंकरिंग में फर्श्ट आती थी। धारा-प्रवाह हिंदी-अंग्रेजी बोलती थी... आज वह ऐसा कैसे हो सकती है? कौन विलीभ करेगा इस न्यूज पर.."

" तो नहीं करे।" बास ने व्यंग से कहा," तुम्हारे लिए ऐसा सोचना मुमकिन है...तुम्हारा नहीं, उम्र का दोष है।"

" सर!अखबार का इथिक्स यह नहीं कहता..." बलराज बड़बड़ाया," मैं जानता हूँ, वह ऐसा नहीं हो सकती... वो शेर है न ... वह झूठ बोलेगा और जीत जाएगा..."

" यह तुम्हारा पर्सनल ओपिनियन है, न्यूज को ओथैंटिक होना चाहिए, इमोशनल नहीं...." बास ने उसी अंदाज में कहा," वह कम्प्लीटली सिनिकल हो गयी है... उसका पति अपसेट रहता है उसकी कारगुजारियों से....उस भले आदमी की फजीहत हो रही है..."

"तो जो आपने लिखा है ओथैंटिक है?" उसने दुखी होकर कहा," अगर यही न्यूज है, तो इसकी कोई जरूरत नहीं है किसी को .... आप लिखते रहिए... अ को ब....समाज वहीं का वहीं रहेगा...बहरा...लंगड़ा... और गूँगा...यह पुरुष वर्ग की पैरोकारी नहीं तो क्या है?"

"माइण्ड योर लैंग्वेज!" बास ने तमक कर कहा," वैसे तुम कहना क्या चाहते हो?इस दलील से मतलब? न्यूज मैं कवर करने गया था कि तुम ? तुम्हें जब कहा, तो दुम दबा बैठे।उस समय तुम्हें अखबार का इथिक्स नहीं सूझा था..."

"आप मुझे एक बार फिर से मौका दीजिए कि इस स्टोरी को कवर करूँ ...सच और झूठ क्या है...पता चल जाएगा." बलराज ने संभल कर कहा, " माना कि उस दिन मुझसे गलती हुई... वन मोर चांस सर... प्लीज!"

बास ने आँखें तरेरी," यह क्या बद्तमीजी है, तुम्हें रहना है कि नहीं अखबार में? काम के समय बहाना बनाते हो, अब इसमें अपना अफेयर ठूँसोगे? तुम्हें इसलिए मौका दिया जाए कि तुम खोज-खबर की साख गिराओ? यह तुम्हारा का ॅलेज नहीं है, न्यूज रूम है, इसका अपना उसूल है...."

"प्लीज सर...." बलराज ने टूट कर कहा," मैं बहुत अजीब महसूस कर रहा हूँ... मेरी आत्मा पर बोझ जमा हो रहा है... मैं अपने प्रोफेशन को जस्टिफाई नहीं कर पा रहा हूँ.... मुझे मौका दीजिए..."

बास को क्रोध आ रहा था,पर उन्होंने अपने को संयत किया।उन्हें भान हुआ कि पूरा न्यूज रूम बलराज के साथ है, सो रंग बदला,"अपने प्रेम को अलग से जस्टिफई करो, सिम्पैथी अखबार का शब्द नहीं है... तुमलोग, उसी दिन काबिल पत्रकार बनोगे, जब न्यूज को न्यूज की तरह लोगे... फाँसी देने वाला जज हत्यारा नहीं होता...तुम न्यूज में न्यूज देखो, दीदी मौसी, प्रेमिका नहीं.... किसी न्यूज पर अपने रिलेशनशिप का इम्पैक्ट मत डालो...तुम्हें तो यह काम किसी भी हालत में नहीं दिया जाएगा... ...यह मत भूलो खोज-खबर में वही न्यूज छपता है, जो सही होता है.... मैंने इस कालम की बुनियाद रक्खी है रूट अखबार में ...मुझे आईना मत दिखाओ...." वे आदतन उठ गए और मैनेजमेंट वाले तल्ले पर तोप दागने चले गए।

बलराज ने उनके जाने के बाद पेज को फाड कर कूड़ेदान में फेंक दिया।यह बास के प्रति उसकी तात्कालिक त्वरित प्रतिक्रिया थी, पर उसका मन शांत नहीं हुआ। संवेदना का एक पूरा बौखलाया समंदर उछाल खा रहा था उसकी नसों में... अपने तनाव को ढीला करने के लिए उसने कम्प्यूटर पर गेम को आन किया... पिगमैन... बुशमैन... और उन पर गोलियाँ दागता एक ड्रैगन... ड्रैगन के अंदर उसे बास की छवि दिखी ....उसकी इच्छा हुई कि एक न्यूज बनाकर इस इमेज के साथ वह बास के साइट पर भेज दे.... इस खयाल के साथ उसके चेहरे पर मुस्कूराहट तैर गयी.. उसने जैसे ही कनेक्शन मिलाया, उसका विचार बदल गया, पोस्ट में न्यूज को सूट करते बास का इमेज डाल कर राहुल के साइट पर भेज दिया और फिर उसकी प्रतिक्रिया का इन्तज़ार करने लगा।

अगर प्रेम ना होता

****

अगर प्रेम ना होता इस दुनिया में
तो क्या खूबसूरत ताजमहल का यादगार सब के दिल में होता।
क्या लोग मिलो दूरी तय करके
आगरा इसका दीदार करने जाते।
अगर प्रेम ना होता इस दुनिया में
तो क्या हीर रांझा और लैला मजनू की जीवंत अमर प्रेम कहानी होती।
प्रेम बिना नहीं सार्थक जीवन
इसके बिना निरर्थक जीवन।
जिसने प्रेम किया है।
वही सुखमयें जीवन जिया है ।
प्रेम बिना नहीं किसी का जीवन
अधूरा है सबका जीवन।
प्रेम जी से हुआ है
वही तो सच्चा जीवन जिया है।
महल छोड़कर मीरा भी
कृष्ण की प्रेम में वन वन भटकी है ।
विष के प्याला को भी पीकर
अमृत कर डाला है।
प्रेम बिना नहीं सार्थक जीवन।
इसके बिना निरर्थक जीवन।
अगर प्रेम ना होता इस दुनिया में
तो क्या दो अजनबियों का।
एक साथ बसेरा होता
दो दिल मिलकर घर संसार बनाते
पीठी दर पी ठी बढ़ता।
ओर उनके वंशज का नाम होता।
प्रेम बिना नहीं सार्थक जीवन
इसके बिना निरर्थक जीवन
जो इसको पहचाना है।
वही सुखमय जीवन जिया है।
अमर हुई वो प्रेम कहानी
जो धन दौलत सूरत ओर वासना के पीछे नहीं भागा है
सिर्फ प्रेम के सच्चे धन को पहचाना है

रीना सोनालिका

फरवरी

बसंत की बहार है फरवरी
फागुन की फुहार है फरवरी
कोपलों का संचार है फरवरी
प्रकृति का श्रृंगार है फरवरी
पुरवइया बयार है फरवरी
गुलाबों का प्यार है फरवरी
प्रेम के लिए खास है फरवरी
फरियादी दिलों की आस है फरवरी
चाहतों का इकरार है फरवरी
युगलों के लिए त्योहार है फरवरी
दिलों की पावन प्रीत है फरवरी
फगुआ राग का गीत है फरवरी
शिव पार्वती का मिलन है फरवरी
सर्दी के दिनों का गमन है फरवरी
सुनहरी धूप का आगमन है फरवरी
धरा पर ऋतुओं का चमन है फरवरी
आमों की पहली बौर है फरवरी
प्रवासी पक्षियों का ठौर है फरवरी
नेह, शांति, सुख, एहसास है फ़रवरी
इसीलिए तो सबसे खास है फरवरी

सोनल मंजू श्री ओमर

गर होता भी है खफा, उनसे यह नादान दिल
सुनकर आवाज को ही जज्बात बदल जाते है।

चाहता हूं दिन-रात उसके हक में दुआएं करूं
लफ़्ज़ छूता हूं तो अल्फाज बदल जाते हैं

फिक्र होती है किस हाल में है मेरी हयात
सोचते बस यही दिन रात बदल जाते हैं

जिस्म के साथ साद हयात नहीं रहती है
मौत के बाद यू हालात बदल जाते हैं।

मोहम्मद काशिफ "हयात"

रंगों मे नहाई
खुशबू मे तैरती,
मस्तानी शाम यह
देती है तेरे
प्यार का अहसास।
सिहराता यौवन
लहराता आँचल,
भीनी सी साँसें
देती हैं शीतल
बयार का अहसास।
झील मे हंस
अंबर के तारे,
चन्दन फुलवारी
आँखों मे तेरी
संसार का अहसास।
मौन अभिव्यक्ति
मदमाती भंगिमा,
उन्मुक्त मुद्राएँ
आने वाली किसी
बहार का अहसास।

डॉ. अखिलेश शर्मा

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : मुझे कुछ कहना है

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-8-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 126

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

केशव शरण

कविताएँ

क्यों न
तुममें
रंग है
और उसमें रूप है
और मुझमें ख़ुश्बू है

क्यों न हम
इतना क़रीब आएँ
कि मिलकर
गुलाब हो जाएँ!

यह मैं
पन्द्रह अगस्त पर ही
चाहता था
मगर अच्छा अवसर है
नए साल पर भी

कछुवे और खरगोश
कछुओं ने
बहुत दूर-दूर तक की
यात्राएँ कीं
लेकिन हम
केवल थल लें
तो भी
उनका सफ़र
दूर तक का है

उनके मुक़ाबले
खरगोश
बस एक मैदान तक रहे

पारा
सवेरे से
सूरज दिखाई नहीं दिया है
ठंडी हवाएँ चल रही हैं
धुंध से लिपटी सर्द ख़ामोशी है

पारा ही देखते तो
ठंड से सिकुड़े रहते
अपने-अपने घर
नहीं जान पाते
चमन के अंदर
मुहब्बत की गर्दिश में
प्यार की तपिश
क्या होती है!

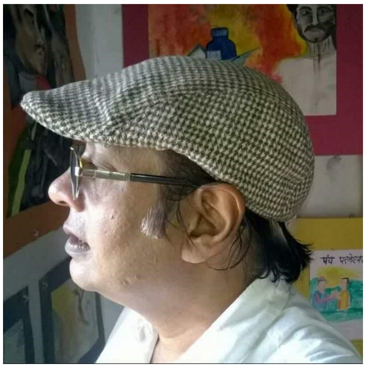

इन्हीं बातों के लिए
हृदय गरमागरम प्यार करे
मस्तिष्क ठंडे-से विचार करे
नेत्र स्वप्निल सौंदर्य देखें
होंठ मधुमय गान करें विमर्श करें
कान मधुर झंकार सुनें
हाथ रूप-सुगंध स्पर्श करें
पाँव बहार के रास्ते चलें
रूह को सुकून मिले

इन्हीं बातों से देह सरसती है
और इन्हीं बातों के लिए देह तरसती है

चलता रहता है
दुनिया को नर्क कहना
ज़िंदगी को जहन्नुम बताना
चलता है
चलता ही रहता है कहना भी
और नर्क तथा जहन्नुम में रहना भी

इसी तरह मरने से डरना
और कुछ न करना

एक दिल
मैं
एक दिल को
जानता हूँ
जो चाहता है
उसे कोई भुलावे दे
मुहब्बत के
मुस्तक़बिल के
और यही वह
मुझसे भी चाहता है!

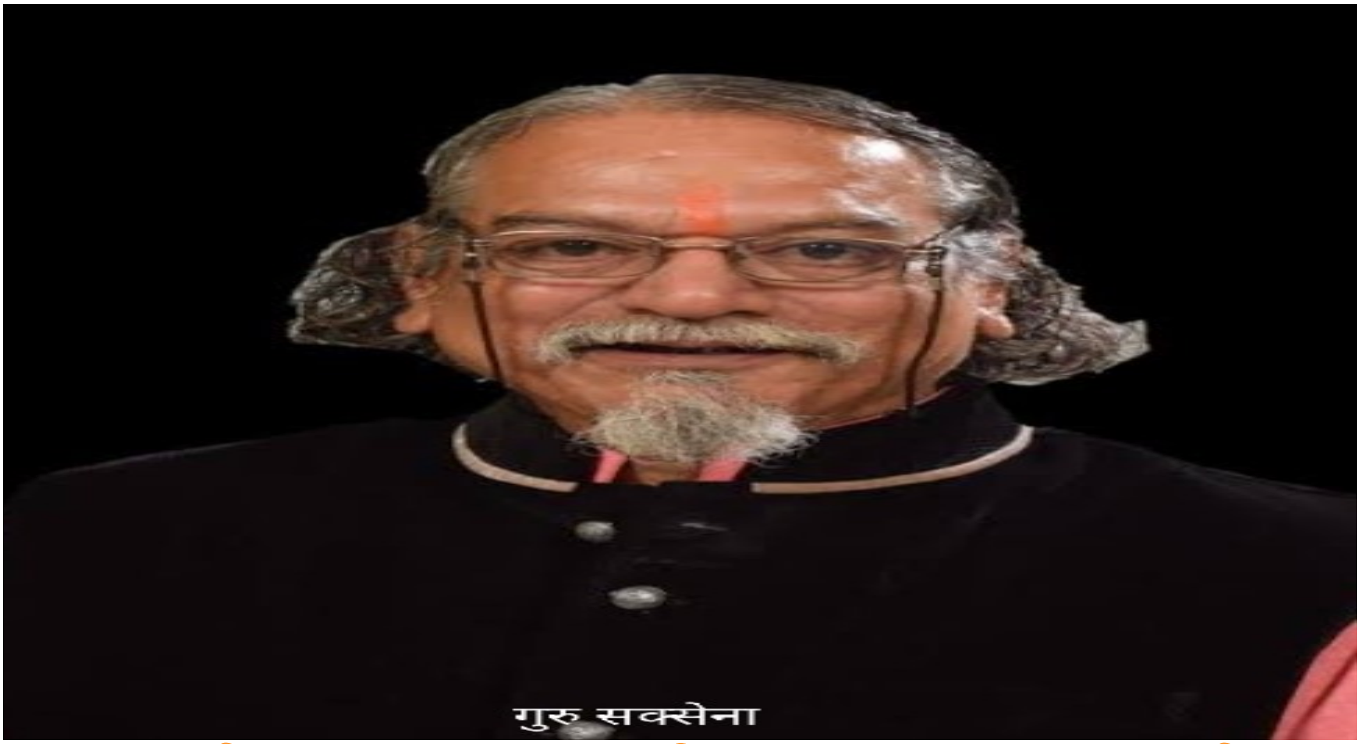

गुरु सक्सेना

आज के सन्दीपनि हैं कवि गुरु सक्सेना

कविता और काव्य में बहुत बड़ा अन्तर होता है। कविता अंश है और काव्य अंशी है। कविता लघु है काव्य का क्षेत्र व्यापक है। काव्य में गद्य, पद्य और चम्पू सब आते हैं। इसीलिए हर कविता काव्य तो है किन्तु हर तरह का काव्य कविता नहीं है। आकार में लघु होते हुए भी कविता काव्य का अर्क है व इसका अर्थ विस्तार किसी भी काव्य से विस्तृत व सीमा रहित है। कविता तो सरस्वती की वह मुखरा बेटी है, जिसे दुनिया की किसी भी भाषा में आसानी से साहित्यिक शिखर पर देखा जा सकता है। कविता युग को जगाती है। अपने युग को जाग्रत करना कवि का धर्म है। आज हम बात कर रहे हैं म.प्र.के नरसिंह पुर के हास्य और गम्भीर कविता के ख्यात व अनुकरणीय कवि कविवर गुरु सक्सेना की, जिन्होंने आधुनिक युग को जगाने के साथ - साथ उसे जगाने वालों को भी जाग्रत किया है, वहीं नव कवियों की नई पीढ़ी भी तैयार की है।

निश्चय ही कविता अवतरण है और यह कवि को मिला ईश्वरीय वरदान है तो भी इस कर्म की साधना बहुत कठिन है। इस वरदान के बल पर एक कवि गहरी अथवा उथली बात भी आसानी से कह लेता है। जिस कठिन बात को बड़े-बड़े विद्वान् नहीं कह पाते हैं उसे कवि छोटी सी रचना के द्वारा कह जाता है इतना ही नहीं उसे कालजई बना देता है।

काव्येतिहास के आधुनिक काल में कुछ ऐसे विद्वान् कवि आए, जिन्होंने बुद्धि चातुर्य के बल पर कविता के आवरण और उसकी आत्मा को ही बदल दिया। कविता से इतर किसी विधा का रचनाकार कवि ही होता है लेकिन कविता के कवि होने के सम्मान के आकर्षण ने इन्हें इतना प्रभावित किया कि गद्यकार होने की महत्ता को ही भुला दिया। "गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।" जैसे सम्मानित कथन को ठेस पहुँचाने में कोई कमी न रखी। अपनी गद्य रचनाओं को कविता की संज्ञा देकर समाज में एक भ्रान्ति की उपस्थिति कर दी। विद्वानों ने छन्द मुक्त रचनाओं को नई कविता का नाम दे दिया।

भाव ही वास्तविक कविता है इस प्रकार के तर्क दिए जाने लगे। रचनाओं में परिवर्तन या परिमार्जन की आवश्यकता ही क्षीण हो गई। कुशल मार्गदर्शक की भूमिका शून्य हो गई। परिणाम यह हुआ कि कविता हार्दिकी न रहकर बौद्धिक हो गई। मितभाषी व निर्मलमन छन्दबद्ध असली रचनाकार हाशिए पर आ गए और चातुर्यगुण सम्पन्न होने से विद्वत्ता सम्पूजित होने लगी। अच्छा यह हुआ कि इन बौद्धिक रचनाओं के श्रवण और पाठन से ऊबे हुए श्रोताओं और पाठकों को अब तक अपनी पारम्परिक कविता के गुणों से विमोह नहीं हुआ था। इधर पारम्परिक कवि अभी भी कविता कर रहे थे। कोई भी धरा कभी बन्ध्या नहीं होती बीज वपन होते ही उर्वर हो जाती है। उसी तरह पारम्परिक छन्दवद्ध रचनाकारों ने अपनी रचनाओं को कवि सम्मेलनों व सोशल मीडिया के माध्यम से पाठकों और श्रोताओं के मध्य पहुँचाना प्रारम्भ किया और आज पुनः छन्दबद्ध कविता अपने

वास्तविक रूप में आ गई। गीत अपनी मूल प्रवृत्ति में आ गया। रूखेपन की जगह सरस और लयमय गुनगुनाहट को स्थान मिल गया।

यद्यपि कविता और काम का कोई गुरु नहीं हो सकता क्योंकि कविता अवतरण है। वह मात्र सृजन नहीं है और काम स्वत: उद्भूत होता है, इसे सिखाया नहीं जाता, पशुओं की वृत्ति से इसे आसानी से समझा जा सकता है, फिर भी काम को आलम्बन तो चाहिए ही। ठीक इसी प्रकार कविता एक अवतरण होते हुए भी उसे सँवारने की कला सीखनी पड़ती है। यह अभ्यास और अनुभव से भी आ जाती है किन्तु उसमें सन्देह रहता है। इसलिए कवि के लिए काव्य शिल्प में पारंगत गुरु अवश्य होना चाहिए। कारण छन्द साधना का अत्यन्त कठिन होना भी है। कलागत शिल्प के सौन्दर्य की आभा को निखारने की विद्या मात्र एक गुरु ही दे सकता है। जिस प्रकार नव प्रसूता की कोख से बालक के जन्म लेने पर डॉक्टर की निगरानी में नर्सों द्वारा बालक के शरीर का शोधन किया जाता है, उसे स्वस्थ और जीवित रखने के लिए उपाय बताए जाते हैं ठीक वैसे ही कवि की हृदय पेटी से कविता का अवतरण तो होता है लेकिन उसमें कई दोष होते हैं जो भावगत अथवा शिल्पगत हो सकते हैं जिन्हें नवकवि अपनी क्षमता से दूर तो करता है किन्तु अज्ञानता बस उन्हें दूर नहीं कर पाता है। ऐसे में आवश्यकता होती है एक सफल मार्गदर्शक अथवा गुरु की जो हर दोष का हरण कर उसे परिमार्जित करा दे। यही कार्य कर रहे हैं कवि गुरु सक्सेना। गुरु छन्द के अधिकृत साधक हैं। कविताओं की वाचिक परम्परा में आपकी अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों के मंचों पर लम्बी यात्रा का अनुभव और छन्द विधान के प्रति आपका समर्पण आपको युग का सिद्ध कवि सिद्ध करता है।

आपके आचार्यत्व में चल रही छन्द की गुरुकुल परम्परा में कितने ही नवागत और प्रतिष्ठित कवि दीक्षित हो रहे हैं। समूचे देश से उनके शिष्य इस गुरुकुल में छन्द सीख रहे हैं। इनकी रचनाओं को युग सुन समझ रहा है और पढ़ रहा है साथ ही सराह भी रहा है। यह उपलब्धि मात्र कवि की नहीं अपितु गुरु का परोक्ष प्रतियोग है। अतः कविवर गुरु सक्सेना आज के सन्दीपनि हैं।

कविताओं में छन्दानुशासन को बचाए रखना रंग और रूप से कविता के आवरण को बचाए रखना होता है। ईश्वर ने संसार को लयबद्ध किया है कवि काव्य के द्वारा समाज को लयबद्ध करता है। वह हास्य और उपहास्य का माद्दा रखता है। गाली से लेकर मन्त्र तक श्रृंगार से लेकर वीभत्स तक के कथ्य से सभी को आनन्द देता है। अपनी सन्देश परक रचनाओं से मानवता में नैतिकता का संचरण करता है वहीं वह सकल सृष्टि के स्वास्थ्य की चिन्ता करता है। कवि के अन्य गुणों के साथ इन सभी गुणों को भी देखना हो तो पढ़िए महाकवि प्रदीप के सम्मान से सम्मानित कविवर गुरु सक्सेना को।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

तुम्हारे साथ रहकर महसूस हुआ अकसर
छोटी है यह जिंदगी छोटी हो गई रहगुजर।

सारी दिशाएँ, पास मेरे मलयज खुशबू बिखरे
सिमट गया संसार सारा बनके आँगन सवेरे
एकांत नहीं मिलता न बाहर, न भीतर
तुम्हारे साथ रहकर महसूस हुआ अकसर।

मतलब है हर बात का खिड़की से आते वात का
धूप दीवारों पर चलता तृण के अंबुजात का
टकराता मेघों से अब प्रणय सोपान चढ़कर
तुम्हारे साथ रहकर महसूस हुआ अकसर।

चीर सकता हूँ शिखर सोख सकता हूँ सागर
तेरे संग,असीमित बल उम्मीद से, जाता निखर
जीत लूँगा हर जहाँ को हारकर तुमसे मगर
तुम्हारे साथ रहकर महसूस हुआ अकसर
छोटी है यह जिंदगी छोटी हो गई रहगुजर।

डॉ. वीरेंद्र प्रसाद

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

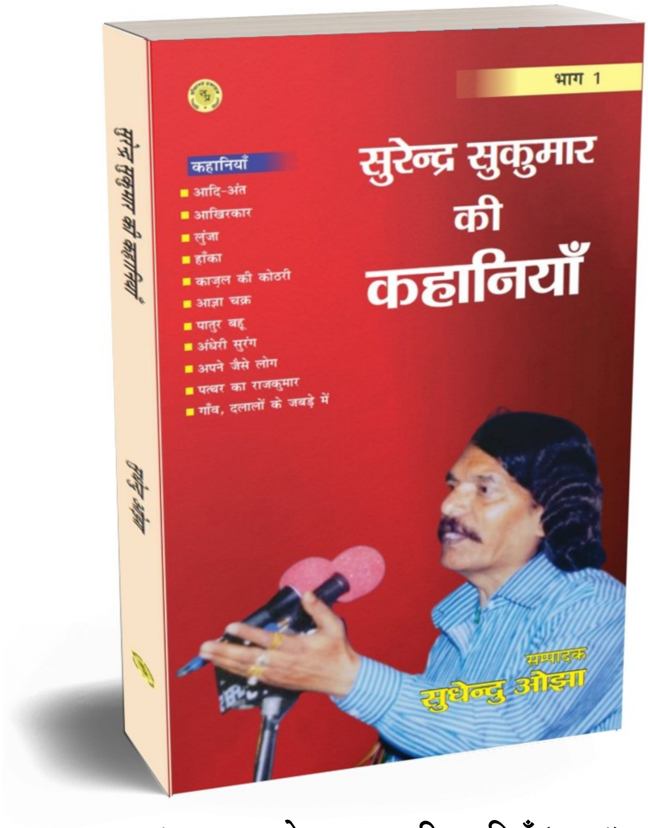

Book Name : **सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)**

Editor : सुधेन्दु ओझा

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Price : 250/-

Genre Prose

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

पौधे और बच्चे

पौधे और बच्चे,
दोनो होते समान।
रोपना औ जन्म देना ,
झेलना कठिनाइयां,
पालन पोषण,
निरीक्षण , संरक्षण,
भरण पोषण,
स्वास्थ्य चिंतायें ,
चिकित्सा व उपचार ,
समुचित दिनचर्या,
स्वस्थ वातावरण,
पौष्टिक भोजन ,
अनुशासन,नियंत्रण,
होते नादान व नासमझ ,
समझना ,समझाना,
जुड़ती भावनाएं ,
पौधे तो होते बेजुबान I
लेना होता
स्वत : संज्ञान ,
पर बच्चे न
होते बेजुबान I
बताते अपनी बात ,
अपना दर्द ,
होता उसका उपचार
फिर हो जाते वयस्क I

बनते त्यागी, वफादार,
धैर्यवान, ईमानदार
परोपकारी,आज्ञापालक
जब पड़ती छाया ,
पश्चात्य सभ्यता की I
करते तर्क- वितर्क
एकाकी परिवार समर्थक ,
टूटते संयुक्त परिवार ,
महत्वाकांक्षी, तनिक स्वार्थपरक ,
सुविधाभोगी I
परिणाम-
टूटते परिवार,
बढ़ती कटुता, थकता शरीर
सन्तान प्रेम वश
दोष बच्चों को नही
अपना मानता I
परवरिश अथवा
किस्मत का दोष
शनैः शनैः
चुकता जाता जीवन,
'सुषमा 'कहती - वह तो
इसे प्रारब्ध ही मानता I

सुषमा सक्सेना

डॉ. राकेश जोशी की ग़ज़लें

1

अगर लिखना मना है तो क़लम का कारख़ाना क्यों
अगर पढ़ना मना है तो यहाँ काग़ज़ बनाना क्यों

इसी दुनिया में बेहतर इक नई दुनिया बसाने को
यहाँ तक आ गए हैं तो यहाँ से लौट जाना क्यों

वहाँ लेकर ही क्यों आया जहाँ फिसलन ही फिसलन है
ये जनता है, नहीं समझी, तू राजा है तू माना क्यों

कई बरसों से इस पर ही बहस ज़ारी है संसद में
जो भेजा एक रूपया था, तो पहुँचा एक आना क्यों

तुम्हें गर आसमां की सैर करनी थी तो कर लेते
कहीं पर बाढ़-सूखे का ही हरदम यूं बहाना क्यों

अगर जंगल को फिर से एक दिन जंगल बनाना था
यहाँ आकर शहर में फिर बनाया आशियाना क्यों

2

दीवारों से कान लगाकर बैठे हो
पहरे पर दरबान लगाकर बैठे हो

इससे ज़्यादा क्या बेचोगे दुनिया को
सारा तो सामान लगाकर बैठे हो

दुःख में डूबी आवाज़ें न सुन पाए
ऐसा भी क्या ध्यान लगाकर बैठे हो

बेच रहा हूँ मैं तो अपने कुछ सपने
तुम तो संविधान लगाकर बैठे हो

हमने तो गिन डाले हैं टूटे वादे
तुम केवल अनुमान लगाकर बैठे हो

अपने घर के दरवाज़े की तख़्ती पर
अपनी झूठी शान लगाकर बैठे हो

ख़ूब अँधेरे में डूबे इन लोगों से
सूरज का अरमान लगाकर बैठे हो

जूझ रही है कठिन सवालों से दुनिया
तुम अब भी आसान लगाकर बैठे हो

कितने अच्छे हो तुम अपने बाहर से
अच्छा-सा इंसान लगाकर बैठे हो

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

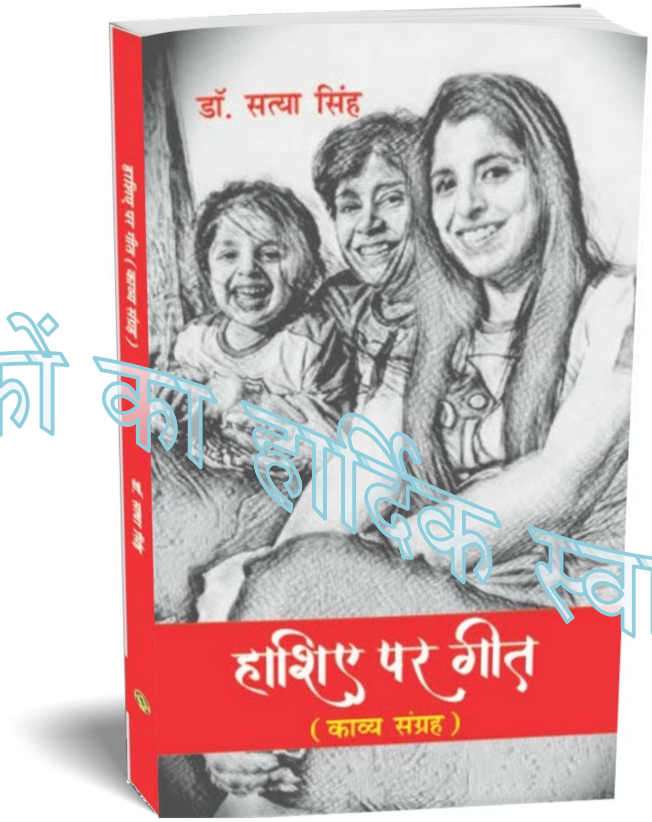

लेखकों का हार्दिक स्वागत है !

Book Name : हाशिए पर गीत

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : 978-81-963524-7-9

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 120

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **विश्वास की हत्या (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : **978-81-964179-8-7**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 198

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

विज्ञान व्रत

आज हवा लगती बौरायी
शायद उनको छूकर आयी

बिल्कुल पास कहीं होंगे वो
महकी - महकी है अमराई

लहरों से अंदाज़ हुआ है
क्या है सागर की गहराई

उनका मुझसे आकर मिलना
है मेरी इज़्ज़त - अफ़ज़ाई

काश कि खुलकर बातें होतीं
बात इशारों में हो पायी

ग़ज़ल

तुम जादूगर दिखते हो
ग़ायब हो पर दिखते हो

अब तक जो कुछ देखा है
उससे बेहतर दिखते हो

ठहरे हो तुम क़तरे में
लेकिन सागर दिखते हो

दुश्मन तुमसे ख़ौफ़ज़दा
उसको लश्कर दिखते हो
झाँकूँ जब - जब दर्पण में
तुम ही अक्सर दिखते हो

ग़ज़ल

मुझको अपने पास बुलाकर
तू भी अपने साथ रहा कर

अपनी ही तस्वीर बना कर
देख न पाया आँख उठा कर

बे - उन्वान रहेंगी वर्ना
तहरीरों पर नाम लिखा कर

सिर्फ़ ढलूँगा औज़ारों में
मुझको देखो तो पिघला कर

सूरज बनकर देख लिया ना
अब सूरज - सा रोज़ जला कर

ग़ज़ल

मैं कुछ बेहतर ढूँढ़ रहा हूँ
घर में हूँ घर ढूँढ़ रहा हूँ

घर की दीवारों के नीचे
नींव का पत्थर ढूँढ़ रहा हूँ

जाने किसकी गर्दन पर है
मैं अपना सर ढूँढ़ रहा हूँ

हाथों में पैराहन थामे
अपना पैकर ढूँढ़ रहा हूँ

मेरे क़द के साथ बढ़े जो
ऐसी चादर ढूँढ़ रहा हूँ

ग़ज़ल ----

आपका आलम रहा हूँ
इक मुजस्सम ग़म रहा हूँ

कब किसी से कम रहा हूँ
आपका परचम रहा हूँ

आप भी मुझमें रहे हो
और यूँ मैं 'हम' रहा हूँ

आप तो पहचान लेंगे
आपका मौसम रहा हूँ

क़द मेरा भी कम न था कुछ
एहतरामन ख़म रहा हूँ

विज्ञान व्रत

आप में जो आसमाँ है
क्या ज़मीं भी कुछ वहाँ है

बोलता वो अब कहाँ है
सिर्फ़ चुप्पी ही बयाँ है

आशियाँ सबका रहा जो
ख़ुद अभी तक लामकाँ है

राज़ मेरा क्या छिपाता
आज वो ख़ुद ही अयाँ है

था निशानी जो सभी की
अब वही क्यों बे निशां है

हर जगह दिखता रहा जो
लापता है अब कहाँ है

विज्ञान व्रत

रामरक्षा मिश्र विमल

मुहब्बत की दूकान जबसे लगाई
घटी है किसी के नयन की ललाई

जहाँ प्रेम, धन का वहीं वास होता
ये दुनिया है सबकी, कहो मत पराई

चलो साफ करते हैं हर एक कोना
कृपा की बदरिया बरसने को आई

बहुत साँकरी हैं मुहब्बत की गलियाँ
छुएँ आलमीरा, सिहरती कलाई

न नोटों की गड्डी न अँखियों से गोली
पड़ें कीट तेरी बिना रस मिठाई

जब पापा देर से घर आते हैं
देर से बंद होती है
अंतिम दरवाजा
हम करते रहे होते हैं
दुनिया का सबसे बड़ा इंतजार।

हम मिलाते रहते हैं फोन
आखिरी वक्त तक
करते रहते हैं उनकी बात
वह उपस्थित होते हैं
हमारी बातों में।

कभी कभार तो
बहुत देर से आ पाते हैं
साग सब्जी, तेल साबुन, नून मसाला
लेकिन देर नहीं होती
आवश्यकताएं पूरी होने में।

चेक होने लगती हैं
उनकी डिग्गी
हेलमेट में जो खाली जगह
कोई तो सामान
मिल जाए खाने के लिए।

आलोक रंजन

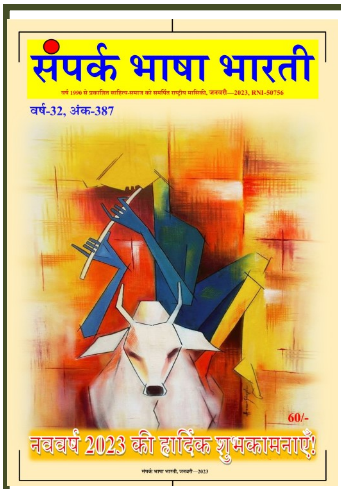

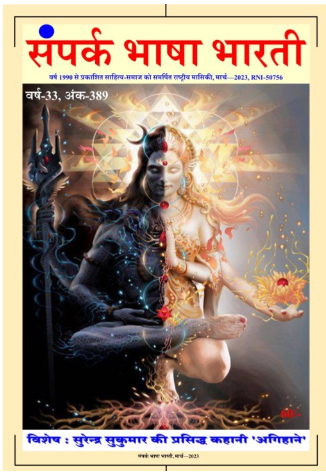

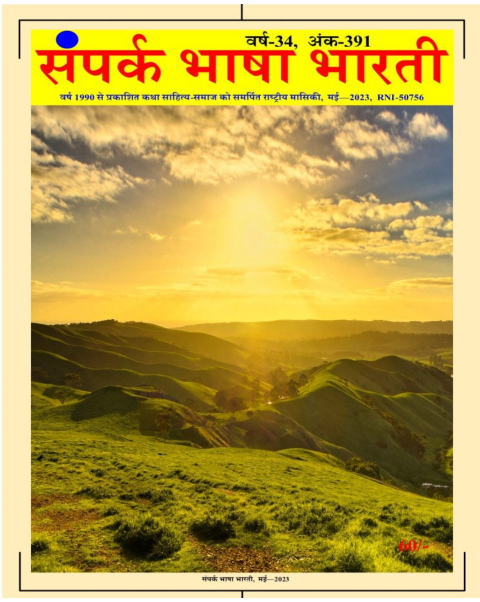

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092
फोन नंबर : 9868108713/7701960982
ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

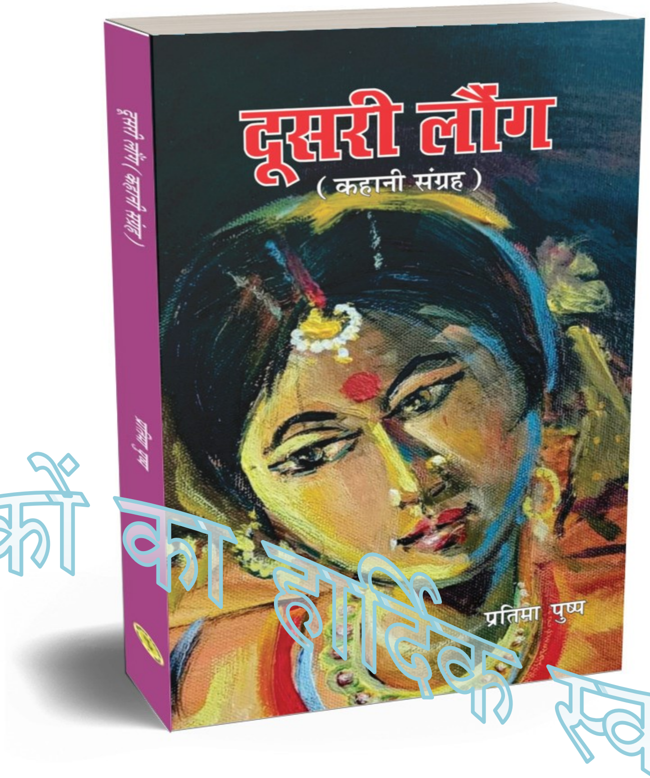

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : दूसरी लौंग (कहानी सांग्रह)
Author प्रतिमा 'पुष्प'
ISBN : : 978-81-963524-2-4
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 134
Price : 250/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

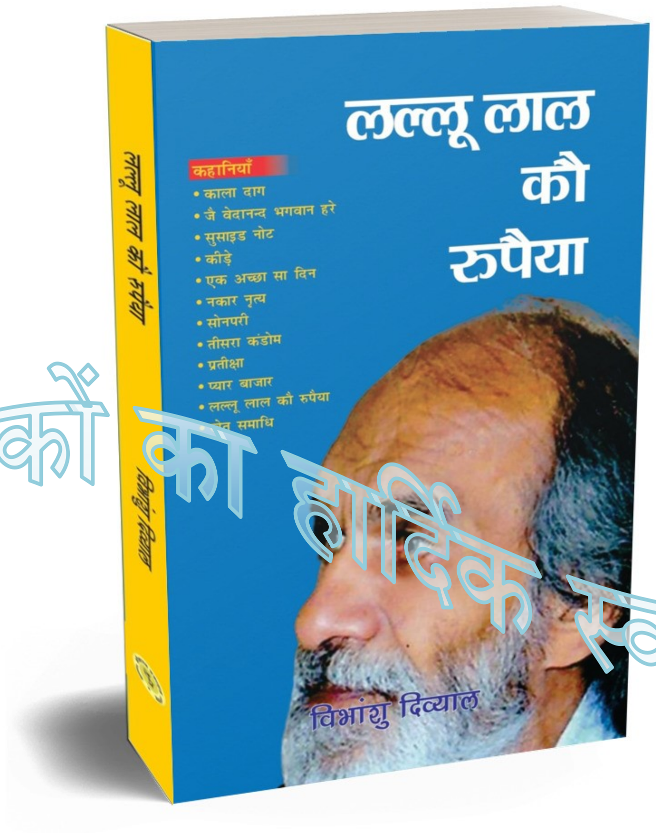

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)
Author विभांशु दिव्याल
ISBN : : 978-81-964179-3-2
Language : हिन्दी
Year of Publication : 2023
Page Numbers : 190
Price : 350/-
Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

खुशी

मुट्ठी भर खुशी
उधार देकर देखिए,
असीम सुकून मिलेगा।
पल-पल
विषण्णता समुपस्थित है।
ऊहापोह सनी
आबोहवा,
कब,
किसे,
रास आती है,
घुटन
और
सिहरन
बढ़ाती है।
आनंद के
चंद पल,
रग-रग में
रोमांच
भरते हैं
पुलकित करते हैं।
तज कर
तनातनी
बस इतना कीजिए,
सबको
खुशी दीजिए,
खुशी लीजिए।

विनोद वर्मा 'दुर्गेश'

उलट

प्यार महज़ ढाई शब्द नहीं है
प्यार तो एक भावना है
प्यार हमारा व्यवहार है
जो अक्सर महसूस होता है
जब अपना कोई रोता है
या कोई अपनों को खोता है
लगता है जैसे उसके ही नहीं
स्वयं के प्राण हुए हैं पखेरू
पर आज अजीब हो गया है प्यार का मापदंड
बस रह गया है नायक नायिका के प्यार तक सीमित
या फिर अश्लील फिल्मों का है भंडार प्रचंड
चलचित्रों में भाई बहन का प्यार है गायब
नहीं दिखाई देता बाप बेटे का प्यार
मां का बेटी से स्नेह- दुलार
पति-पत्नी का निस्वार्थ प्यार
लगता है अब संवेदना ही नहीं रही
हर कोई है भौतिक संसाधनों में संलिप्त
इंतजार कर रहे हैं हम सभी एक और फिल्म रिलीज होने का
जिसमें फूहड़ गानों और खून खराबे का हो भंडार
टीआरपी भी हो जाएगी उसकी रिकॉर्ड पार
नहीं अब किसी को देश के प्रति प्यार की परवाह
रास्ता भटकाकर कर रहे सभीअपना जीवन निर्वाह

विश्व प्रकाश मेहरा

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-7-2

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 190

Price : 150/-

Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)

Saubhagya Publication
Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

लेखकों का हार्दिक स्वागत है!

Book Name : **प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)**

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : **978-81-964179-7-0**

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 154

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in

ईंट भट्ठे के लिए
घसीटा जब
जीऊणू का खेत
मैं चुप रहा।

छीना जब
रंगड़ों का खेत
उस वक्त भी
चुप रहा मैं।

लूटी जाती रही मिट्टी
छीनी जाती रही उर्वरता
कोई कुछ ना बोला
चुप थे सब।

करता रहा काले मुंह
भट्ठे का धुआं जब
कोई कुछ नहीं बोला
चुप रहे सब।

पांच से प्रधान
पटवारी से तहसीलदार
चुप थे सब जन
चुप था मैं भी।

अक्लदार होकर भी
वीर मानुष जो
बन जाते हैं भेड़ें
ब्राघ उन्हें छोड़ें कहां
बिना खाए और उधेड़े

कृष्ण चंद्र महादेविया

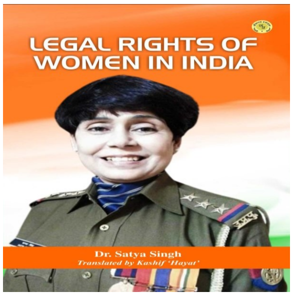

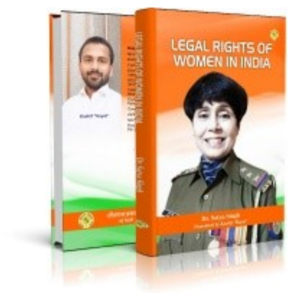

Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है .....

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर, नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982